समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

मई २००५ ♦ वर्ष ५५ ♦ अंक ५ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

सम्मेलन के सम्मान समारोह में : महिला शक्ति, राष्ट्र शक्ति :

डा. गिरिजा व्यास

बाएं से सर्वश्री सीताराम शर्मा, भानीराम सुरेका, मोहनलाल तुलस्यान, राम औतार पोद्दार

काफी संख्या में महिलाओं की उपस्थिति में पश्चिम बंगाल मारवाड़ी महिला सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती बिमला डोकानिया

नवनिर्मित अग्रसेन भवन, भवानीपटना का उद्घाटन करते
हुए सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान।

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान को
पश्चिम बंगाल के राज्यमंत्री श्री नारायण विश्वास
'फॉस्मी एक्सेलेंस अवार्ड' प्रदान कर सम्मानित करते हुए।

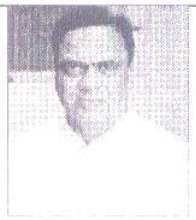

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पुनर्निर्वाचित अध्यक्ष श्री रमेश चंद बंग

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नये महामंत्री श्री ललित गांधी

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	५
मारवाड़ी समाज के राजनीति में बढ़ते कदम / *श्री सीताराम शर्मा*	६-७
मदर्स डे तो मनाते हैं लेकिन... / *श्री भानीराम सुरेका*	८
मारवाड़ी समाज अब आत्मलोचन करे / *श्री मुकुन्द दास माहेश्वरी*	९
मारवाड़ी समाज २१वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में / *श्री मुरलीधर बंग*	१०-११
सुख व शांति / डा. मंगला प्रसाद	११
समाज विकास में सम्मेलनों की भूमिका / *डा. अहिल्या मिश्र*	१२-१३
कविता : झूठ कर रहा राज / *श्रीमती कोमल अग्रवाल*	१३
चलित चक्र / *श्री शिवचरण मंत्री*	१४
फर्क तब और अब का / *श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट*	१५
सोने की नगरी में पानी की तलाश / *डा. तारादत्त 'निर्विरोध'*	१६-१७
कविता : नारी जागृति / *श्री जगदीश प्रसाद तुलस्यान*	१७
अब ऐसा सुन्दर जश्न भी मनाइये / *साभार : हिन्दुस्तान*	१८-१९
कविता : यह शहर / *श्री काली प्रसाद जायसवाल*	१९
सबसूं बड़ी बात / *श्री प्रह्लादश्री माली*	२०
समाज सुधार बनाम पीढ़ियों की दूरियां / *श्री कपूरचंद पाटनी*	२१

युग पथ चरण

❒ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा डा. गिरिजा व्यास सम्मान गोष्ठी के साथ-साथ पूर्वोत्तर, उत्कल, झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र की प्रांतीय गतिविधियों एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं मारवाड़ी युवा मंच की महत्वपूर्ण रिपोर्टें। २२-२६

समाज विकास

मई, २००५

वर्ष ५५ ● अंक ५

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३११ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

जनवाणी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

– सम्पादक

'समाज विकास' पत्रिका नियमित प्राप्त हो रही है और अपने उद्देश्यों में गतिगामी है।

– मुकुन्ददास माहेश्वरी, अध्यक्ष, म.प्र. मारवाड़ी सम्मेलन, जबलपुर

आदरणीय नन्दकिशोर जी,

समाज विकास अप्रैल अंक में श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया के झारखंड प्रान्तीय मा. सम्मेलन का अध्यक्ष चुने जाने की खुशी की खबर पढ़ा। पुरे परिवार के तरफ से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। ऐसे व्यक्ति को पाना हमारे समाज के लिए गौरव एवं शान की बात है। उम्मीद है कि वे अपने कार्यकलाप से समाज का नाम रोशन करके एक नया इतिहास रचेंगे।

– शिवशंकर अग्रवाल, बलांगीर

राजस्थान पत्रिका के स्वर्णजयंती वर्ष के संदर्भ में सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा की शुभकामनाएं पाकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। पत्रिका के प्रति व्यक्त आपकी सदभावना के लिए आभार।

– गुलाब कोठारी, सम्पादक- राजस्थान पत्रिका, जयपुर

किये जा रहे उत्कृष्ट कार्यों के लिए मैं सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका को हार्दिक बधाई देता हूं।

– के.के. खेमका, कोलकाता

'समाज विकास' फरवरी अंक के सम्पादकीय एवं लेख ने मुझे अपने विचारों को अधिक पुष्ट करने की प्रेरणा दी है। जो समस्याएं मारवाड़ी समाज की है और उभारी गई है वे समस्त हिन्दू समाज की है। आपका समाज जागरूक है और अपने उत्थान के साथ देश के उत्थान का स्वर दे रहा है। यह प्रशंसनीय है। यों तो देश में आपके जैसे अनेक संगठन बने हुए हैं पर आपकी सक्रियता प्रशंसनीय है।

– डॉ. कन्हैयालाल शर्मा, कोटा

परम आदरणीय श्री सीताराम जी शर्मा से जो मनोबल मिला, उसकी कल्पना सिर्फ मैं ही कर सकता हूं। आप स्वस्थ एवं दीर्घायु हों तथा यशस्वी बनें। मुझे राजमहल से कांग्रेस उम्मीदवार बनाया जायेगा, या नहीं परंतु मैं आपका आजीवन आभारी रहूंगा, हालांकि मेरे लिए चुनाव लड़ना काफी आवश्यक है क्योंकि हमलोगों को झारखंड के लिए कुछ करना है। राजमहल में चुनाव संभवत: १५ फरवरी को होगा।

–बिनोद कुमार अग्रवाल, राजमहल (झारखंड)

समाज विकास उत्तरोत्तर वृद्धि की ओर अग्रसर हो रहा है। हरेक अंक में मारवाड़ी समाज के उद्धार हेतु अच्छी उद्बोधक सामग्री छपती है। समाज सुधार के लेख और कविताएं भी पर्याप्त मात्रा में छपती हैं। मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियों का संकलन एक स्थान पर मिलने से समाज की दशा और दिशा का दिग्दर्शन होता है। बधाई।

– नागराज शर्मा, पिलानी (राजस्थान)

राजस्थानी समाज की प्रेरक पत्रिका 'उत्कण्ठा' ''प्रगतिशील राजस्थानी : प्रतिभा विशेषांक'' हेतु विविध क्षेत्रों में सक्रिय (पुरुष, महिला, युवा) राजस्थानियों के प्रतिभा परिचय सादर आमंत्रित है। उत्कण्ठा फाउण्डेशन द्वारा प्रकाश्य विशिष्ट अंक 'मिले प्रेरणा जीवन में' एवं 'महके जीवन आपका' हेतु उपयोगी रचनाएं, प्रेरक प्रसंग, बोध कथाएं आदि सादर आमंत्रित हैं। **उत्कण्ठा,** ५८ पूजा पथ, पार्श्वनाथ कालोनी, डी.सी.एम., अजमेर रोड, जयपुर- १९

– शिवरतन मोहता, जयपुर

पूर्ण दिलचस्पी से समीक्षा पढ़ी, बहुत अच्छी लगी। बिड़ला परिवार न सिर्फ मारवाड़ी समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखता है बल्कि इनका सुयश पूरे देश में स्थापित है। भारत के औद्योगिक उत्थान एवं सांस्कृतिक समृद्धि में बिड़ला परिवार का योगदान अतुलनीय है। मूल्यों एवं आदर्शों को संजीवित रखने के लिए बिड़ला परिवार ने जो लड़ाइयां लड़ी वह देश की जनता द्वारा सदियों तक समादृत रहेगी।

– डी.के. सराफ आनन्दलोक अस्पताल, कोलकाता

सुप्रतिष्ठित बिड़ला परिवार के आदर्शों एवं मूल्यों को संजीवित करती हुई

'नॉट अलाउड टु क्राई : द बिड़ला बैटल वीथ कैंसर' *नामक पुस्तक पर सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा द्वारा लिखित* ***'रोना मना है'*** *शीर्षक समीक्षा समाज विकास मार्च २००५ अंक में प्रकाशित हुई थी। यहां प्रकाशित है तत्सम्बंधित बिड़ला परिवार से प्राप्त पत्रों के सारांश :-*

सद्य प्रकाशित 'नॉट अलाउड टु क्राई' पुस्तक की समीक्षा समाज विकास पत्रिका में पढ़ी। श्री सीताराम शर्मा द्वारा लिखित यह अंश भव्य है।

– डॉ. के.के. बिड़ला
पूर्व सांसद
नई दिल्ली

मैंने इसे पढ़ा- आलेख काफी रोचक है। लेखक द्वारा दिग्दर्शित अभिरुचि प्रशंसनीय है।

–बसंत कुमार बिड़ला
कोलकाता

बहुत-बहुत धन्यवाद। समीक्षात्मक आलेख बेहद रोचक है।

– सरला बिड़ला
कोलकाता

'नॉट अलाउड टु क्राई' पुस्तक को आलोकित कर रही पत्रिका समाज विकास ०५ अंक की प्रतियां मुझे भेजने एवं मुझे याद करने हेतु बहुत-बहुत धन्यवाद।

– सुरेन्द्र कुमार बिड़ला
कोलकाता

समाज में सम्यक् शिक्षा पर जोर दिया जाए

✍ मोहनलाल तुलस्यान

मारवाड़ी समाज में इन दिनों एक भारी बहस का मुद्दा यह है कि विवाह योग्य लड़कियों के लिए उपयुक्त लड़के नहीं मिल रहे हैं। स्थिति जटिल से जटिलतर होती जा रही है एवं समस्या का समाधान अन्तर्जातीय विवाहों में खोजा जा रहा है।

मैं व्यक्तिगत तौर पर अन्तर्जातीय विवाहों का विरोधी नहीं हूं। विवाह अन्ततः जीवन भर साथ निभाने की प्रक्रिया का शुरूआती मगर सबसे महत्वपूर्ण क्षण है। आपसी सहमति का अभाव व तनिक सी असावधानी वैवाहिक जीवन को कष्टपूर्ण, कलहपूर्ण व हास्यास्पद बना सकती है। इसलिए परिवार वालों की मर्जी से पहले वर-वधू के मन का मिलन हो, यह सर्वाधिक जरूरी है।

पिछले वर्षों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार का लाभ मारवाड़ी समाज को भी मिला है। जहां एक समय अक्षर ज्ञान करके लड़कों के व्यवसाय व लड़कियों के घर संभालने का रिवाज था वहीं अब उच्च शिक्षा प्राप्त करना एक आम बात है। पूरी दुनिया की तरह भारत में भी ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जो बदलाव हो रहे हैं, जिस तरह परम्परागत व्यापार के आयाम बदल रहे हैं एवं नित नई तकनीकें व्यापार के क्षेत्र में गलाकाट प्रतियोगिता को जन्म दे रही हैं उसमें शिक्षा का कोई विकल्प बचा भी नहीं है। आज औसतन मारवाड़ी घरों में बच्चों को शिक्षित करने की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है।

शिक्षा के मामले में सुखद आश्चर्य यह है कि लड़कियां लड़कों से आगे बढ़ रही हैं। लड़के स्नातक के बाद नौकरी या व्यवसाय की ओर उन्मुख हो रहे हैं, लेकिन लड़कियां स्नातकोत्तर और उससे आगे पेशेवर डिग्रियां भी हासिल कर रही हैं। नौकरी के क्षेत्र में पद और पैसा का क्षेत्र भी लड़कियों ने अपने हिस्से में सुरक्षित कर लिया है।

अब जब ऐसी लड़कियों के ब्याह की बात उठती है तो समाज में उपयुक्त लड़के सहजता से नहीं मिलते। पैसे वाले लड़के तो मिलते हैं, लेकिन सिर्फ पैसा किसी संबंध के होने की गारंटी नहीं है। कोई धनकुबेर हो मगर योग्यता के मामले में लड़की से कमतर हो तो 'हीन भावना' संबंध के आड़े आ जाती है। ऐसी स्थिति में लड़की का अहं लड़के को दबायेगा; उधर लड़के का धन लड़की को नीचा दिखाना चाहेगा और बात बनने के बजाय बिगड़ती जाएगी। तुलसी दास ने लिखा है -

तुलसी कबहूं न छाड़िए, अपने कुल की रीति,
लायक ही सो कीजिए, ब्याह, बैर अरू प्रीति।

- तो यह जो 'लायकत्व' है वह पैसे की बजाय योग्यता पर केन्द्रित हो रहा है। वह जमाना गया जब सिर्फ पैसे को देखकर लड़की के संबंध तय होते थे। अब पैसे के साथ-साथ योग्यता को भी प्राथमिकता की सूची में रखा जाता है।

जब लड़की अपने समाज में अपने समकक्ष योग्यता का लड़का नहीं देखती तो स्वाभाविक रूप से अपने अहं की तुष्टि के लिए वह अन्य समाजों के लड़कों की ओर आकृष्ट होती है और जहां उसे मनपसन्द लड़का मिलता है, वहीं शादी करती है। उसके माता-पिता भी इस मुद्दे पर उस पर दबाव बनाने की स्थिति में नहीं होते, क्योंकि उपयुक्त लड़का न खोज पाने की व्यर्थता उन्हें अपने हथियार डालने को मजबूर कर देती है।

यदि परिस्थितिवश बेमेल विवाह हो भी जाती है तो उसकी परिणति दुखद होती है। ऐसे बहुत से मामले हैं जो न्यायालयों या सामाजिक मंचों के सम्मुख हैं एवं उनका समाधान निकालना मुश्किल है।

अपने समाज को विकसित करने की एक शर्त यह भी है कि हर अंग को समरूप से विकसित किया जाय। हम मारवाड़ियों ने विकास के हर नये मानक को चुनौती के रूप में स्वीकार कर तदनुरूप अपने को ढाला है एवं अधिकांश क्षेत्रों में सफलता पाई है। आज यह बेमेल विवाह की स्थिति भी एक चुनौती है जिसे हमें स्वीकार कर ऐसी व्यवस्था लानी होगी कि योग्यता के मामले में लड़के-लड़की में भेद न रहे। विवाह-संबंध हमारे समाज में परंपरागत रूप में ही रहे ताकि पूर्वजों के स्वप्न का यह समाज अपनी विशिष्ट पहचान न खो दे। अन्तर्जातीय विवाह में सामाजिकता की गुंजाइश नहीं रहती क्योंकि वहां दो भिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि, धर्म (अगर हो), आचार-विचार, व्यवहार व संस्कृति का मेल होता है और किसी एक का पृथक अस्तित्व नहीं रह जाता।

आने वाले दिनों में इस गंभीर मसले पर निरंतर बहस हो एवं उपयुक्त व्यवस्था के क्रियान्वयन के द्वारा इसका समुचित समाधान समाज खोजे, यही कामना है।●

कोलकाता पौरसभा चुनाव

मारवाड़ी समाज के राजनीति में बढ़ते कदम

✍ सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष,अ.भा.मा.स.

मीना पुरोहित
२२ नं. वार्ड
भाजपा

शशि मीमानी
२३ नं. वार्ड
तृणमूल कांग्रेस

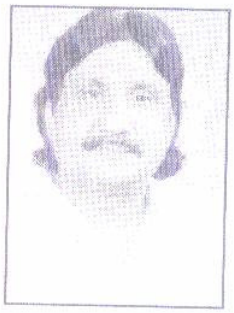

अनील शर्मा
४२ नं. वार्ड
कांग्रेस

मारवाड़ी समाज के रूप, स्वरूप एवं तस्वीर में बराबर एक तब्दीली आ रही है। २१वीं शताब्दी के मारवाड़ी युवक-युवती जीवन के प्रत्येक क्षेत्र– विज्ञान से साहित्य, कला से क्रीड़ा, अर्थनीति से राजनीति में अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। इस सामाजिक परिवर्तन के दौर में मारवाड़ी समाज नये-नये क्षेत्रों में नये कदम बढ़ा रहा है।

राजनीति के प्रति समाज की सोच एवं नजरिये में एक परिवर्तन आया है। 'चुनाव लड़ना अपना काम नहीं', चन्दा दो और पल्ला झाड़ो या अधिक से अधिक किसी को पैसा देकर खड़ा करा दो- ये विचार अब बदल रहे हैं। कहते हैं जब सुप्रसिद्ध उद्योगपति कृष्ण कुमार बिड़ला ने चुनाव लड़कर लोकसभा में जाने की ठान ली तो उनके पिता सेठ घनश्याम दास बिड़ला कतई राजी नहीं हुए और उन्होंने घोर विरोध किया- ''यह चुनाव लड़ना अपना काम नहीं है'', घनश्याम दासजी ने कहा, ''हम लोगों को चुनाव में खड़ा कराते हैं।'' कृष्ण कुमार नहीं माने, चुनाव लड़े हारे भी, फिर जीते भी।

मारवाड़ी अब सिर्फ कोषाध्यक्ष नहीं रहना चाहता। वह सिर्फ अपने आर्थिक बल पर राजनैतिक प्रभाव हासिल नहीं करना चाहता। वह चाहता है कि उसकी राजनैतिक प्रतिष्ठा एक निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में स्थापित हो- आम राजनेताओं की तरह। वह अब दबाव-पैरवी, जोड़-तोड़ की बजाय अपनी लोकप्रियता एवं सांगठनिक क्षमता के आधार पर राजनीति में अपना एक स्थान सुनिश्चित करना चाहता है। राजनैतिक दल में अपनी कार्यक्षमता एवं जीतने की संभावना के आधार पर मनोनयन प्राप्त करना चाहता है। समाज में राजनीति

श्री दीपक शर्मा
२१ नं. वार्ड
सीपीआईएम

सुनीता झवर
४२ नं. वार्ड
भाजपा

श्वेता इंदोरिया
४३ नं. वार्ड
प. बं. उन्नयन कांग्रेस

रतन लाल
४५ नं. वार्ड
सीपीएम

साधना अग्रवाल
७४ नं. वार्ड
वामफ्रंट मनोनीत
फारवर्ड ब्लाक

के क्षेत्र में एक नया आत्म विश्वास एवं आत्म बल साफ परिलक्षित है।

कोलकाता पौरसभा के आसन्न चुनाव (१९ जून) के लिए विभिन्न राष्ट्रीय राजनैतिक दलों के प्रत्याशियों की प्रकाशित सूची को पढ़ने के बाद मारवाड़ी समाज की राजनीति में नयी सक्रियता एवं नयी स्वीकृति साफ परिलक्षित होती है। कोलकाता कारपोरेशन का चुनाव तो सिर्फ एक नमूना है। संभवत: यह पहला अवसर है कि प्राय: सभी राजनीतिक दलों से मारवाड़ी उम्मीदवार कोलकाता कारपोरेशन के चुनाव में हिस्सा ले रहे हैं।

एक ओर कोलकाता की उप-महापौर मीना पुरोहित (भाजपा) २२ नं. वार्ड से पुन: मैदान में हैं वहीं वाममोर्चे ने अजित पांजा जैसे दिग्गज को शिकस्त देने के लिए युवा उम्मीदवार नवल जोशी के पीछे पूरी ताकत लगा दी है। पुराने खिलाड़ी अनिल शर्मा कांग्रेस की ओर से ४२ नम्बर वार्ड में कमान संभाले खड़े हैं। सुनीता झंवर, कुसुम लुण्डिया और सुमन गुप्ता भाजपा के उम्मीदवार के रूप से टक्कर ले रही हैं तो वाममोर्चे ने समाजवादी रतन अग्रवाल तथा नवयुवक दीपक शर्मा को मैदान में उतारा है। सुब्रत मुखर्जी की पश्चिम बंग उन्नयन कांग्रेस मंच ने ४३ नम्बर वार्ड में एक नये चेहरे श्वेता इन्दोरिया को अपना उम्मीदवार बनाकर एक नयी चुनौती खड़ी करने का प्रयास किया है। वहीं २३ नम्बर वार्ड से ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रही हैं सुपरिचित शशि मीमानी। नये गठबंधन के बाद कांग्रेस ने ४१ नं. वार्ड से पवन बंसल को विपक्ष से लड़ने के लिए खड़ा किया है। वाममोर्चे ने इस बार समाज के कई उम्मीदवारों को टिकट दिया यह भी अपने आप में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। आर.एस.पी. की ओर से ६५ नं. वार्ड से सुशील कुमार शर्मा को खड़ा किया गया तो फारवर्ड ब्लाक ने ७४ नं. वार्ड से साधना अग्रवाल को उम्मीदवार बनाया है। हम सभी भाई-बहन उम्मीदवारों की चर्चा यहाँ नहीं कर पा रहे हैं।

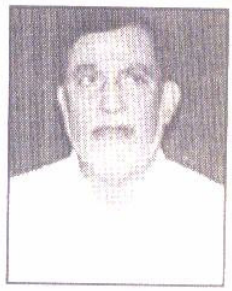

नवल जोशी
६३ नं. वार्ड
सोशलिस्ट पार्टी

सुमन गुप्ता
१२३ नं. वार्ड
तृणमूल कांग्रेस समर्थित
भाजपा

कांग्रेस से कम्युनिस्ट तक, तृणमूल कांग्रेस हो या उससे अलग हुआ उन्नयन कांग्रेस मंच या फिर भाजपा सभी राजनीतिक दलों ने मारवाड़ी समाज के उम्मीदवारों को टिकट दी है। इनमें से कुछ हारेंगे, कुछ जीतेंगे। प्रत्येक मारवाड़ी उम्मीदवार जीते यह हमारी भावना है, लेकिन यह संभव नहीं क्योंकि विभिन्न राजनैतिक दलों के ये उम्मीदवार एक दूसरे के विरुद्ध भी चुनाव लड़ रहे हैं। यह एक लोकतांत्रिक प्रकिया है। वे जातिगत आधार पर चुनाव नहीं लड़ रहे हैं। चुनाव जीतना-हारना बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात है राजनीति में चुनाव के माध्यम से अपनी भूमिका निभाना। कोलकाता कारपोरेशन के एक लघु परिप्रेक्ष्य में ये बातें लिखी गयी हैं। हमें विश्वास है कि राज्य एवं राष्ट्र के स्तर पर इसकी चर्चा बढ़ेगी। राजनीति में बढ़ते मारवाड़ी समाज के कदमों का स्वागत है।●

मदर्स डे तो मनाते हैं लेकिन क्या माँ के प्रति सम्मान भी दिखाते हैं?

भानीराम सुरेका, महामंत्री, अ.भा.मा. सम्मेलन

|माता के समान शरीर का पालन-पोषण करने वाली, चिन्ता के समान देह को सुखाने वाली, और विद्या के समान शरीर को अलकृत करने वाली दूसरी कोई वस्तु नहीं है।|

पाश्चात्य प्रभाव कहिये या आधुनिकता का तकाजा कई शब्द इन दिनों हमारे जीवन में इस तरह रच-बस गये हैं कि चाहकर भी हम उनसे किनारा नहीं कर सकते, क्योंकि इन शब्दों का सीधा-साधा संबंध हमारी संवेदना और अनुभूति से है। वैलेन्टाइन डे, मदर्स डे से शुरू होकर पॉल्यूशन (प्रदूषण), स्मोकिंग (धूम्रपान) तक से संबंधित डे की एक श्रृंखला बनाकर उसके पालन की अनिवार्यता हमारे लिए तय कर दी गई है या हमहीं ने इन दिनों को पालन करने का जिम्मा उठा लिया है।

हालांकि हमारी सभ्यता और संस्कृति में सिर्फ एक दिन के लिए किसी के प्रति सम्मान दिखाने की प्रवृत्ति कभी नहीं रही। हमारे यहां तो शाश्वत प्रेम और सम्मान को बढ़ावा दिया गया। जिस किसी से आत्मीयता हो प्रतिपल, प्रतिदिन उसे प्रकट करने को जीवन में उपलब्धि का सूचक माना गया। प्रकृति और मनुष्य को लेकर जितना चिन्तन हमारी संस्कृति में है वह अन्यत्र दुलर्भ है, लेकिन इसे विडम्बना ही कहा जा सकता है कि हमारे यहां इन दिनों अपनी गौरवशाली संस्कृति से मुंह मोड़कर दूसरों की संस्कृति के नकल की प्रवृत्ति जोरों पर है और उसी का नतीजा है कि विभिन्न डे को लेकर उन्माद की हद तक लोगों में जोश देखा जाना।

अभी-अभी मदर्स डे मनाया गया। माँ के प्रति सहानुभूति जताते हुए अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं, टी.वी.चैनलों यहां तक कि एफ.एम. रेडियो पर भी कार्यक्रमों की झड़ी लगा दी गई। ऐसा लगा कि माँ कोई अजनबी व्यक्ति है जिसके प्रति सहानुभूति प्रकट करना हमारी नैतिकता का तकाजा है। जिसके प्रति हमारी श्रद्धा होनी चाहिए, जिसके ऋण से हम कभी उऋण नहीं हो सकते, जिसके लिए हमारे यहां कहा गया है कि 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' उसी माँ के प्रति सहानुभूति का प्रदर्शन हमारी क्या हमारी पतनशीलता का साक्षात उदाहरण नहीं है?

मां न हो तो क्या हमारा वजूद हो सकता है? वह हमारी जन्मधात्री है और हमारे व्यक्तित्व की निर्मात्री भी। माँ संवेदनाओं के एक ऐसे रिश्ते का नाम है जिसने समय के साथ हर थपेड़े को सहते हुए आदमी में मानवता को जीवित रखा है। जो कुछ भी माँ के पास होता है, उसके आसपास होता है, जितना भी वह जानती है, देखती है उसमें जो कुछ भी श्रेष्ठ होता है वह अपनी संतान में उड़ेलने को आतुर रहती है।

माँ केवल मात्र उत्पादक इकाई ही नहीं है उससे कहीं अधिक है। दो शरीरों के मिलने से एक शरीर का जन्म हो सकता है, बस। लेकिन, उस जन्मे शरीर को संस्कारों और मानवीय गुणों से भरना उसकी सुरक्षा करना यह सब माँ के ऊपर ही तो निर्भर करता है।

संसार की रौनक माँ के ही दम से है। भारतीय संस्कृति में माँ हमेशा पूज्या रही है। यदि मिथकों पर नजर डालें तो हम पाएंगे कि आर्यों से पहले सिंधु घाटी सभ्यता में भी शक्ति मिलते-जुलते किसी रूप की पूजा हुआ करती थी। माँ को हमेशा शक्ति का प्रतीक माना गया है। आज भी शक्ति के रूप में दुर्गा, काली, पार्वती की पूजा हम करते ही हैं। माँ हमारे रोम-रोम में है। उसकी बुलंदी को छूना कठिन ही नहीं असंभव है। माँ की ममता का पर्याय ढूंढना मुश्किल है। गरीब हो, अमीर हो, पढ़ी हो, अनपढ़ हो हर माँ अपनी संतान को सर्वश्रेष्ठ बनाना चाहती है। वह अपनी संतान के साथ दैहिक और भावनात्मक रिश्ते को जीती है और उसका अपना जो कुछ भी होता है उसे संवेदनाओं में पिरोकर उतना कूट-कूटकर भर देती है कि संतान परिपूर्ण मानव बन सके। 'दुनिया में जो भी महान बने हैं उनके जीवन में उनकी माँ का महत्वपूर्ण अवदान रहा है।'

ऐसी ममता की प्रतिमूर्ति, त्याग की साक्षात प्रतिमा, जननी के प्रति वर्ष में सिर्फ एक दिन सहानुभूति के दो शब्द कहकर अपनी जिम्मेवारियों की इतिश्री मान लेना अमानवीयता के अतिरिक्त और क्या हो सकता है?

यह ठीक है कि आज परिवार पहले जैसे नहीं रह गये हैं। संयुक्त परिवार बीते दिनों की बात हो गई है और परिवार पति-पत्नी एवं बच्चों तक सिमट गया है। पर क्या इसका मतलब यह है कि माँ की महत्ता भी कम हो जाए?

प्रतिस्पर्धा और आपाधापी के आज के माहौल में नौकरी या व्यापार करते हुए घर की जिम्मेवारियों को निभानेवाली नारी जब मातृत्व सुख पाती है तो उसकी पहली प्राथमिकता संतान होती है, बाकी सारे काम पीछे छूट जाते हैं।

इसलिए सिर्फ मदर्स डे तक माँ के प्रति श्रद्धा या सहानुभूति को सीमित न रखकर यह जरूरी है कि माँ के प्रति सम्मान को हम शाश्वत बनाएं और ऐसा कुछ करें कि हर माँ अपनी संतान के प्रति गर्व का अनुभव कर सके। सिर्फ फिल्मी नहीं वास्तविक जीवन में भी 'मां, तुझे सलाम की' भावना हो तो हमारा जीवन अधिक सुखमय, निष्कलंक व स्वत: स्फूर्त हो सकेगा, क्योंकि उसमें माँ की प्रतिच्छवि का साथ रहेगा।●

मारवाड़ी समाज अब आत्मलोचन करे

✍ मुकुन्ददास माहेश्वरी, अध्यक्ष, मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

व्यक्ति समाज की इकाई है और समाज व्यक्तियों के समूह का संस्कारित रूप। व्यक्ति अपने जीवन को सहज और सुन्दर बनाना चाहता है और चाहता है कि समाज उसे ऐसे साधन उपलब्ध कराये जिससे उसका जीवन सुखी और सम्पन्न बन सके। व्यक्ति की इस आकांक्षा की पूर्ति के लिए सामाजिक संगठन चिन्तित भी रहते हैं, समय-समय पर चिन्तन-मनन भी किया जाता है। समाज में व्याप्त परम्परागत रीति-रिवाज रहन-सहन, खान-पान, परम्परागत रूढ़ियां आदि पर गहन चर्चा भी की जाती है, व्यक्ति को सुधार के रास्ते अपनाने की प्रेरणा भी दी जाती है। सारा सब कुछ कलमबन्द हो जाता है, उसका अनुसरण कितना हो रहा है या कितना होगा अथवा कितना प्रभावित किया उसने किसी व्यक्ति को शायद इस संबंध में न तो कोई लेखा-जोखा होता है, न कोई शोध कार्य और न कोई मनन-चिन्तन ही। सुन्दर-सुन्दर विचार व निर्णय पत्र-पत्रिकाओं की भारी-भरकम कोख में दबे रह जाते हैं, इतिहास बनते रहते हैं। कोई निर्माणात्मक कदम भी तो नहीं उठाये जाते। हां, विज्ञापन और मीडिया के इस युग में प्रचार और प्रसार पर विशेष जोर दिया जाता है। अन्यथा जो समस्याएं १०० वर्ष पूर्व थीं, आज भी बनी है, आज भी उन पर चिन्तन की बात होती है- क्या १०० वर्ष का समय-नव चेतना के लिए पर्याप्त नहीं है।

एक ओर मारवाड़ का वीरोचित इतिहास है। मारवाड़ या राजस्थान का व्यक्ति स्वाभिमान ही जन्मता है। स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और आत्मगौरव की रक्षा के लिए महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप, भामाशाह, मीराबाई और न जाने कितनी विभूतियां इस प्रदेश की देन हैं। स्वतंत्रता के लिए सब कुछ न्योछावर करने वाले भी इसी प्रदेश में जन्मे थे। वीरों और बलिदानियों की यह भूमि आज भी अपनी परम्परा को कायम किए हुए है। इस वीर भूमि की सन्तानें आज सारे विश्व में अपना कीर्तिमान बनाये हुए है। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, व्यापारिक सभी क्षेत्रों में इनका प्रशंसनीय वर्चस्व है। किन्तु आज इस समाज को सामान्यतया कुशल व्यापारी, धर्मप्रिय और रूढ़िवादी माना जाता है, आज भी लोग इस परिवर्तन विरोधी कहते हैं। इतिहास साक्षी है, फिर भी आरोप क्यों लगाये जाते हैं। कहीं न कहीं कुछ शेष रह गया है, कहीं न कहीं कोई कमी है हमारी। शायद हम रूढ़ियों के बन्धनों को नहीं तोड़ पाये या रूढ़ियों ने हमें जकड़ लिया है या हममें इतना नैतिक साहस नहीं है कि हम इन्हें तिलांजलि दे सकें। हम तो सैकड़ों वर्षों से चली आ रही मान्यताओं को एक निर्जीव खम्भे की तरह पकड़े है और कह रहे हैं यह खम्भा हमें छोड़ता ही नहीं। अरे भाई! आप खम्भे को जकड़े हैं, खम्भा आपको नहीं। कैसी विडम्बना है, हम कहते हैं यह हमारे पूर्वजों की विरासत है, इस विरासत को हम कैसे छोड़ें और इसी उहापोह में हम बिना सोचे समझे, बिना विचार किए, बिना मनन-चिन्तन के उनमें उलझे हैं। अंध-विश्वासों और बुराइयों की उम्र बढ़ रही है, हम लकीर पीट रहे हैं, असामाजिक कार्य पनप रहे हैं, उनका भरण-पोषण हो रहा है। पर्दा प्रथा, स्त्री स्वातंत्र्य, बेटी-बेटे की शिक्षा में अन्तर, दहेज, विवाह एवं मृत्यु के समय आडम्बर आदि-आदि आज भी समाज में व्याप्त है। यह मानसिकता कैसे बदल सकती है? कैसे बदली जा सकती है? ये ज्वलन्त प्रश्न आज भी हमारी चिन्ता को ममोस रहे हैं।

समय तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। इस परिवर्तन की कुछ लहरों ने हमें भी कुछ थपेड़े लगाये। सामाजिक संगठन बने, विचार मंथन हुए। शिक्षा, प्रशासन, व्यापार- व्यवसाय, मीडिया क्रान्ति आदि क्षेत्रों में हमने प्रयास किए, सफलता भी प्राप्त की, किन्तु हम इसमें एकांगी रहे, हमारा ध्यान वैयक्तिक रहा, समाज हमारे मानसिक परिवेश से ओझल रहा। आज भी हमारी मानसिकता सिमटी हुई है, हम उसे समाजगत नहीं बना पा रहे, समाज से नहीं जोड़ पा रहे हैं, जबकि हमारी पहचान ही हमारे समाज से होती है। आज आवश्यकता है अपनी सामाजिक पहचान बनाने की और यह तभी संभव है जब हम समाज को साथ लेकर चलें, समाज का प्रत्येक व्यक्ति समान समानता के दायरे में आ जावे, वह एकान्तता से पीड़ित न रहे, अकेलेपन का बोझ न ढोता रहे।

नव युग ने हमारे संस्कारों को झकझोर दिया है। संस्कार हमें नैतिकता में बांधकर हमें संस्कारित करते रहते हैं और फिर भारतीय संस्कार तो संसार के गिने चुने अलंकार हैं जो सनातन काल से सारे संसार में पवित्र माने जाते हैं। पाश्चात्य गोरी सभ्यता की पछुआ हवायें आज सारे संसार में फैल रही हैं, पारिवारिक टूटन, फैशन, खान-पान, रहन-सहन, बोलचाल, हाव-भाव व्यवहार आदि-आदि में विस्फोटक स्थिति बन रही है। यह भी हमारी चिन्तन परिधि का विषय है।

अत: एक ओर पुरातन और दूसरी ओर नव्यतम समस्याएं हैं, बड़ी दुविधा जन्य स्थिति है। आवश्यकता है बड़े धैर्य के साथ आत्मलोचन की, एक उज्ज्वल, किन्तु सरल मार्ग के निर्माण की जो युगानुरूप समाज को पथ-निर्देशन कर सके, व्यक्ति को सामाजिकता की सुन्दर परिधि दे सके।●

बसन्त

कुण डूंगरां पै हांसता आखर उकेर ग्यो?
चांदा पै मोर मांड ग्यो मनसा चतेर ग्यो।
छाती सूं चपक सीत कै सोई छी रात में
तड़के गुलाबी गरम अर सोरभ बखेर ग्यो।
सरग्यूं की सावली नै देख हांसग्यो धणों।
पण आसमान लूमग्यो मोती उसेर ग्यो।
रुत की उमर की झाळ तो झलरी न्ह जमीं सूं
फागां को चंग और अंगीरा कुसेर ग्यो।
दीखत में पवन हो भलो पण दोगलो काढ्यो
सांया सरीर अंग-अंग हाथ फेरग्यो।
पलकां बछार गोपियां बैठी री कुंज में
ऊ बेईमान सांवरो गायां उछेर ग्यो।

■ गिरधारी लाल मालव,
अन्ता (राजस्थान)

मारवाड़ी समाज - २१वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में

✍ मुरलीधर बंग, हैदराबाद

इसमें कोई संदेह नहीं कि २०वीं सदी मारवाड़ी समाज के लिए उत्थान, विकास और सामाजिक सुधारों की सदी रही। बड़ी तेजी से आर्थिक और शैक्षणिक विकास हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में समाज के युवक-युवतियों ने सफलता के नवीन कीर्तिमान स्थापित किए। प्रशासन, प्रबन्धन एवं महत्वपूर्ण राजकीय संस्थानों में समाज का तुलनात्मक वर्चस्व बढ़ा। तकनीकी, प्राविधिक और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में हमारे समाज के छात्र-छात्राओं ने अपनी योग्यता और दक्षता को प्रमाणित किया और स्त्री-शिक्षा का पर्याप्त प्रसार हुआ।

समाज का तीव्र गति से आर्थिक विकास हुआ। साधारण आर्थिक स्थिति वाले परिवार मध्यम आर्थिक स्थिति वाले परिवारों में और मध्यम आर्थिक स्थिति वाले परिवार सम्पन्न परिवारों की सूची में सम्मिलित हुए। यद्यपि बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में समाज में बड़े-बड़े औद्योगिक घरानों का देश की अर्थव्यवस्था में योगदान कुछ कम हुआ तथापि समग्र रूप से समाज की आर्थिक स्थिति अवश्य मजबूत हुई।

राजनीति में भी समाज की सहभागिता पूर्व की अपेक्षा निश्चित रूप से बढ़ी। स्वातन्त्र्योत्तर काल में मारवाड़ी समाज ने आर्थिक शक्ति के साथ-साथ राजनैतिक शक्ति के महत्व को समझा, फलस्वरूप समाज के भाई-बहिन पार्षद और पंच से लेकर केन्द्रीय मंत्री मण्डल तक पहुंचे। सर्वाधिक प्रसन्नता की बात यह रही कि प्रवासी मारवाड़ी समाज ने जनकल्याण की भावना को संस्थागत रूप प्रदान करते हुए इसे राजनीति से सम्बद्ध किया।

इस बात को हम, आप सभी को स्वीकार करना चाहिए कि २०वीं शताब्दी मारवाड़ी समाज की सामाजिक संचेतना का काल रहा। इस काल में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का प्रादुर्भाव हुआ, जिसकी संचेतक अखण्ड ज्वालाएं देश के लगभग प्रत्येक भाग में प्रादुर्भूत हुई और इसने समाज में व्याप्त मध्ययुगीन अनेक सामाजिक कुरीतियों और कुप्रथाओं को भस्मीभूत किया। सम्मेलन के अथक प्रयासों का ही परिणाम रहा कि असंभव सा प्रतीत होने वाला कार्य संभव हुआ और सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज एकता के सूत्र में आबद्ध हुआ। आज मारवाड़ी समाज की पहचान व्यवसायी समाज की संकुचित सीमा से निकल कर नीतिवान, प्रगतिशील और जागरुक समाज की हो चुकी है। हमारा समाज देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल लेने की अद्‌भुत विशेषता के कारण प्रगति के रथ पर आरूढ़ हो आगे निर्बाध गति से बढ़ा। २०वीं शताब्दी में समाज की विशेषता रही कि मारवाड़ी समाज ने अपने मूल्यों, आदर्शों और सिद्धांतों को अक्षुण्ण रखा। अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखा, जबकि यह एक अत्यंत कठिन कार्य था।

वस्तुत: मारवाड़ की भौगोलिक परिस्थितियों ने इस समाज को व्यवसाय और वीरोचित कर्म की ओर अग्रसर किया। बीसवीं सदी के प्रारम्भ तक इस समाज का अपनी जन्मभूमि से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा, किन्तु शनै: शनै: यह घनिष्ठता कम होने लगी और हमारा समाज जहां भी जाने लगा, वहीं पर व्यवसाय के साथ-साथ स्थायी निवास करने लगा। आज स्थिति यह हो गई है कि अधिकतर समाज का जन्मभूमि से सम्बन्ध न के बराबर रह गया है, ऐसे में संस्कृति का संरक्षण बहुत ही जटिल कार्य है। स्वाभाविक है कि मनुष्य जहां भी रहता है वहां की संस्कृति, आचार-विचार, जीवन शैली और वातावरण उसे प्रभावित करते हैं।

२१वीं सदी के ऊषाकाल में ही अनेकानेक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परिवर्तन दृष्टि गोचर होने लगे हैं। बाजार वैश्विक स्वरूप धारण कर चुके हैं, आर्थिक प्रतियोगिता चरम सीमा पर पहुंच चुकी है। उच्च शिक्षा, गुणवत्ता, विज्ञापन और सुसंचालन उद्योग जगत में सफलता के लिए अनिवार्य बन गए हैं। उत्पादन केन्द्रों द्वारा उपभोग को अधिकतम संतुष्टि प्रदान करना नितान्त आवश्यक हो गया है। चूंकि हमारा समाज एक व्यवसाय केन्द्रित समाज है अस्तु हमें उपरोक्त समस्त आवश्यकताओं को संतुष्ट करने में सक्षम होना पड़ेगा तभी हम समाज और देश का विकास करने में सफल हो सकेंगे। मैं समझता हूं कि २१वीं सदी में समाज को मार्गदर्शित करने के लिए सम्मेलन को व्यावसायिक मार्गदर्शक प्रकोष्ठों की स्थापना का प्रयास करना चाहिए। ऐसा होने पर सामाजिक एकता का मार्ग निश्चित ही प्रशस्त होगा।

२०वीं सदी में पाश्चात्य संस्कृति का जो अन्धानुकरण प्रारम्भ हुआ, वह आज अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका है। पूरा देश इस रोग से संक्रमित है और हमारा समाज भी इससे अछूता नहीं है। हमारे जैसे संयुक्त परिवारों के समर्थक समाज का एकल परिवार की ओर उन्मुख होना हमारी सामाजिक संरचना के लिए एक खतरनाक संकेत है। एकल परिवार की अवधारणा ने ही हमारे समाज को स्वच्छन्दता, होटल और टी.वी. संस्कृति, संवेदनहीनता, आध्यात्मिक पतन और पारस्परिक सहयोग भावना से विमुखता जैसी आधुनिक बुराइयों से त्रस्त किया है। आज हमारे घरों में भजन-कीर्तन का स्थान बेढंगे पश्चिमी संगीत ने ले लिया है। इससे न केवल हमारा नैतिक पतन हो रहा है वरन् हम अपनी आयु का भी क्षय कर रहे हैं। हमारे समाज की आज सबसे बड़ी समस्यायें आडम्बर, वैभव प्रदर्शन और अपव्यय है। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्थिक विकास के साथ-साथ अर्थ की उपयोगिता के हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन आ रहा है। ऐसा नहीं कि ये समस्याएं मात्र हमारे समाज में ही हैं, अन्य समाजों में नहीं। पूरा देश इन समस्याओं से ग्रस्त है। किन्तु ऐसा सोचकर हम हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठ सकते। कारण कि हमारा इस प्रकार का आचरण हमारे सामाजिक मूल्यों और आदर्शों के सर्वथा विपरीत है। हमारा समाज एक उत्कृष्ट और सुसंस्कृत समाज है। हमारी जीवन शैली और आचार-विचार इतर समाजों के लिए आदरणीय और अनुकरणीय हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो प्रत्येक शासन प्रणाली द्वारा हमारे पूर्वज बार-बार सम्मानित नहीं होते। हमें अपने गौरवशाली अतीत और उज्ज्वल भविष्य के लिए इन समस्याओं से छुटकारा पाना होगा। दहेज प्रथा और बहुओं पर

अत्याचार का बीजासुर हमारे मन-मस्तिष्क में किसी न किसी रूप में विद्यमान है, हमें इसका वध करना ही होगा।

सम्मेलन ने समाज को सदैव नई दिशा दी है और दे रहा है। सम्मेलन द्वारा अनेकानेक सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध प्रभावी जनमत समय-समय पर बनाया गया है और समस्याओं का निस्तारण भी हुआ। फिर भी बदलते हुए वैश्विक परिवेश में नई-नई समस्यायें जन्म ले रही हैं और लेती रहेंगी। सम्मेलन को सावधान रहकर आलोचक और विवेचक की भूमिका का एक साथ निर्वाह करना होगा। यहां पर एक वैद्यजी और रोगी का वृतान्त उल्लेखित करना प्रासंगिक होगा। एक बार एक रोगी वैद्यजी के पास गया और नब्ज दिखाई। वैद्यजी ने रोगी की नब्ज देखी और कहा कि तुम्हें अजीर्ण हो गया है अत: यह दवा खा लो, तुम स्वस्थ हो जाओगे। रोगी चला गया और तीन दिन बाद पुन: आया और बोला, वैद्यजी, मेरा रोग तो घटने की बजाय और बढ़ गया है। उन्होंने पूछा, तुमने परसों क्या खाया था ? रोगी बोला, मूंग की दाल का हलवा। फिर पूछा कल क्या खाया था ? जलेबी और मालपुए। फिर पूछा आज क्या खाया ? गाजर का हलवा। वैद्यजी को अपनी भूल का अहसास हुआ और उन्होंने कहा कि ये दवा लो और इसके साथ केवल उबली हुई खिचड़ी ही खाना। रोगी ठीक हो गया। कहने का तात्पर्य है कि समाज रूपी शरीर को स्वस्थ रखने के लिए सचेष्ट होकर वर्तमान समस्याओं और भावी संभावनाओं के अनुसार सम्मेलन रूपी वैद्य को अपने कार्यक्रम और योजनाओं का सुस्पष्ट निर्धारण करना होगा। किसी भी संगठन की सफलता उसकी चिन्तनशीलता और रचनात्मक कार्यों के प्रति प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है।

निष्कर्षत: २१वीं सदी में समाज की बनने वाली तस्वीर भयानक प्रतीत हो रही है। समाजरूपी शरीर में सदियों की संयमित जीवन-शैली के पश्चात् निर्मित सुसंस्कार रूपी मज्जा के कुसंस्कारों के तन्तु निर्मित होना प्रारम्भ हो गए हैं, सभी अंग-उपांग, भौतिकवाद, भ्रूण हत्या, आडम्बर, अपव्यय, कृत्रिमता, अहंकार, प्रभुत्ववाद, अनैतिकता, कदाचार और व्यक्तिवाद जैसी अन्यान्य बीमारियों से ग्रस्त होते जा रहे हैं। यदि हमें समाज रूपी शरीर को २१वीं सदी में पुष्ट, स्वस्थ और बलवान बनाना है तो सभी को संगठित होकर सामूहिक रूप से प्रयास करने होंगे। शिक्षा और उद्योग के साथ-साथ सामाजिक जीवन को भी परिष्कृत करना होगा।

++++++ ○○○○ ++++++

सुख और शान्ति

✍ **डॉ. मंगला प्रसाद, महामंत्री,** गांधी दर्शन समिति, कलकत्ता

मानव जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं, उनमें एक है सुख और दूसरा है शान्ति। सुख प्राप्त करने के अनेक स्थान हैं, किन्तु शान्ति का प्राप्त होना जीवन में अत्यंत कठिन है। धन-वैभव, सम्पदा, प्रतिष्ठा, यश, शिक्षा एवं कई ऐसे साधन हैं, जिससे सुख तो मिल सकता है, लेकिन मन को शान्त तथा आनन्दित करना अत्यंत कठिन एवं दुरुह कार्य है। सुख की लिप्सा में मनुष्य ऐसे कई जघन्य और असामाजिक कार्य भी करता है, जो उसे प्राप्त हो जाने पर अशान्त करती रहती है, परंतु उसकी बाध्यता है कि वह संचय और परिश्रम तो शान्ति प्राप्त करने के लिए करता है, लेकिन उसका वह संचय उसे अशान्त ही करता रहता है। संचय की गयी वस्तु, धन और अन्य सामग्री के रख-रखाव में व्यक्ति जितना समय देता है, वह स्थायी नहीं होती, कारण यह सभी वस्तुएं नाशवान है। सभी जानते हैं कि यह दुनिया एक खिलौना है, जो टूटता-फूटता रहता है, हम उससे मन तो बहला सकते हैं, किन्तु उसके फूटते ही हम अशांत भी हो जाते हैं। अत: भौतिक सुख क्षणिक है, इससे शान्ति कदापि नहीं मिल सकती। सुख को परिवारजनों, अपने हितैषियों इत्यादि में बांटा जा सकता है. किन्तु शान्ति का बंटवारा कभी नहीं किया जा सकता, उसे अनुभव करने से ही स्वयं अपने में आनन्द की अनुभूति होती है। जिस प्रकार मल-मूत्र का वेग, दूसरों की दृष्टि, स्वयं का चिंतन दूसरे व्यक्ति नहीं कर सकते, उसी प्रकार शान्ति भी दूसरों द्वारा नहीं प्राप्त की जा सकती। इसे स्वयं में ही अनुभव करना होता है। यह कथा-प्रवचन, ज्ञान-ध्यान, तीर्थाटन-पर्यटन से भी नहीं मिल सकती, उसे भय, क्रोध,लोभ, हिंसा एवं आसक्त से मुक्त होकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्येक मनुष्य आज अपने जीवन का सबसे बड़ा दुश्मन है। उसे न तो अपने मन पर नियंत्रण है और न वह अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहता है। उसका यह सोचना तथा कहना निरर्थक है कि वह अपने पेट और परिवार के लिए श्रम करता है। उसका परिश्रम नशीले पदार्थों के सेवन तथा अपने सुख और वैभव के लिए है। विश्व की खोज आज तनावमुक्त जीवन जीने के लिए है, कारण विश्व का प्रत्येक व्यक्ति शान्ति की खोज में लगा हुआ है, वह स्वयं इस खोज में है कि जीवन में शान्ति कैसे आए? अब यह स्पष्ट हो चुका है कि हमें शान्तिमय जीवन जीने के लिए ऐसे उपक्रम करने होंगे, जिसमें भौतिक सुख बाधक न बनें। इसके लिए आवश्यक है कि हम भौतिक सुख की ओर प्रेरित न होकर सुख बाधक न बनें। इसके लिए आवश्यक है कि हम भौतिक सुख की ओर प्रेरित न होकर मानवीय गुणों को अपनाने का प्रयास करें, जिसमें हिंसा, अभिमान, स्पर्धा, अतिरेक, अहम् जैसी विविधता बाधक न बनें।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपनी प्रार्थना सभाओं में शान्ति प्राप्त करने के कुछ लक्षण बताए थे, उसमें उन्होंने कहा था कि यदि हम सत्य पथ पर चलें अथवा उसका अनुसरण करें तो कोई कारण नहीं कि हमें शान्ति न मिले। उन्होंने यह भी कहा था कि हिंसा की प्रवृत्ति भी मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी बाधा है, यह कभी भी जीवन में शान्ति नहीं ला सकती। कारण, व्यक्ति इस चक्रव्यूह में फंसा रहता है कि वह किसे कितना नुकसान पहुंचाए और अपमानित कर सके। इसलिए सुख और शान्ति एक साथ नहीं रह सकती, दोनों के मार्ग अलग-अलग है। शान्ति तो स्थायी है और सुख अस्थायी, इसे समझ लेना ही मानवीय जीवन का सबसे बड़ा गुण है।●

समाज विकास में सम्मेलनों की भूमिका

✍ डॉ. अहिल्या मिश्र, हैदराबाद

पत्थर युग से व्यक्ति अपने निर्माण परम्परा के पश्चात् विकासोन्मुख है। विकास यात्रा में आज वह चांद पर पहुंच चुका है। उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों का लेखा-जोखा कर सम्पूर्ण पृथ्वी के रहस्योद्घाटन पर ठप्पे लगा चुका है। मंगल तारे पर चढ़ाई कर अपना साम्राज्य स्थापित करने की योजना बना रहा है। मानव क्लोन बनाकर बीजासुर के सच को आकार दे रहा है। उपलब्धियों का समूचा आकाश अपनी अन्वेषक एवं चिन्तक वृत्ति के कारण निर्माण करने में सक्षम हुआ है। मानव निर्मित इलेक्ट्रानिक मीडिया महाभारत के धनंजय की आंख का सच प्रस्तुत कर रहे हैं। हृदय एवं मस्तिष्क प्रत्यारोपण संभव होते ही सावित्री के सत्यवान का पुनर्जीवित होना आम बात हो जाएगी। इतनी उपलब्धियों से युक्त मनुष्य अपनी सभ्यता, संस्कृति या संस्कार के बचाव एवं उन्नति के लिए चिन्तित एवं अकेलेपन के विभिन्न पड़ावों से बोझिल है। खोते हुए सामूहिक पहचान उसे उद्विग्न करते हैं एवं वह इसकी प्रप्ति के लिए यत्नशील होता है। यह यत्न वैयक्तिक रूप से समाज गत, समूह गत आदि कई आकारों पर कई कोणों से सम्पन्न होता है। व्यक्ति को सामाजिक प्राणी कहा गया है। यह सामाजिक प्राणी अपनी एकान्तता को समाज में विलीन करता है। अब प्रश्न उठता है कि अपनी सामाजिकता को कैसे बचाया जाए? व्यक्ति की कौन सी भूमिका हो जो समाज-स्वीकार्य हो? दूसरा ज्वलंत प्रश्न है कि आज जब परिवार भी टूटन झेल रहे हैं सभी संबंध या रिश्ते सिमट कर अंकल-आंटी की सीमाओं में आबद्ध हो गये हैं। मैं-मेरा परिवार-पति-पत्नी एवं बच्चे का पर्याय हो गया है। दादा-दादी, नाना-नानी आदि निरर्थक रिश्ते होते जा रहे हैं। ऐसे में समाज की कौन-सी नयी संधारणा अवतरित हो? परिवार की आकृति ने सामाजिकता को अच्छा खासा प्रभावित किया है। सामाजिकता सिमटने लगी है। जातिगत वर्गों में विभाजित हो कर संकुचित हुई अब नवीन सोच एवं मीडिया क्रांति से प्रभावित पंगु होने लगी है। लोग स्वहित में इतने लीन हैं, स्वानन्द में इतने खोये हैं कि समाज या समूह उनके लिए अजूबा सा दीखता है। एक बंधन, एक छटपटाहट सा झेलते हुए वे कसमसाहट के साथ कभी भी इसे झेलते हैं। मनोभाव चेहरे पर दर्पण सा आलोड़ित होता है। इस विन्हण्णा को कैसे दूर किया जाए। समाज को कैसे व्यक्ति के लिए उपयोगी कार्यक्षेत्र बनाना है यह विचारणीय है। इन सब बातों पर दृष्टिपात करें तो सामाजिक सम्मेलनों की भूमिका स्वमेव चिन्हित हो जाती हैं।

मानव स्वभाव से तो सामाजिक प्राणी है किन्तु आज के परिवेश उसके संस्कार को अपने माध्यम से तोड़ने पर तुले हैं। वास्तव में समूह के संस्कारित रूप समाज का निर्माण विभिन्न रंग, रूप, आकार, संघ रूपी मनुष्य की मोहकता से परिपूर्ण फूलों होता है। समाज भिन्नता में मनुष्य के वातावरणिक, भौगोलिक, राजनैतिक, देशिक आदि भिन्नता के कारण ही परिलक्षित होता है। हमारा समाज भी अपने मानवीय भिन्नता के वैशिष्ट्य के साथ निर्मित है। अपनी कर्मठता, दूरदर्शिता, श्रम, सहनशक्ति, त्याग, दान, सहिष्णुता, सहयोग एवं समन्वय के गुणों से विभूषित भारतवर्ष के कोने-कोने में अपना स्थान बनाने एवं अपने समाज की स्थापना का इसके माध्यम से धर्म, शिक्षा एवं अर्थ के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्यों का संपादन करने में सक्षम रहता है। यह गौरवान्वित बात है।

जहां आज की बढ़ती हुई जनसंख्या और समाज में आयी जागरूकता ने समाज के संगठन पर बल दिया है वहीं कुछ तत्व इसके गतिरोधक भी हैं। किन्तु सदा से चली आई विचारधारा ध्वंस से बड़ा निर्माण है। आज भी हम इसी विचार धारा के अन्तर्गत समाज के समुचित संयोजन एवं संचालन के लिए अखिल भारतीय स्तर से लेकर नागरीय स्तर तक सामाजिक संगठनों की संरचना कर अपने समाज का समुचित संचालन करने की ओर दृढ़ हैं। 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन' अवधारणा के अनुरूप ही हम अपने चिन्तन में स्वस्थ एवं विकसित परम्परा को प्रश्रय दे रहे हैं।

ऐतिहासिक सत्य है कि हमारे पूर्वजों ने भारतीय स्वतंत्रता में अपना तन-मन-धन सब कुछ अर्पित किया। राष्ट्र ने जब-जब कल आज या आने वाले दिनों के लिए जो भी बलिदान या सहयोग चाहा है, हम हमेशा खुले दिल-दिमाग से इन सबके लिए तत्पर रहे हैं। पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्व का निर्वहन हमारा परम कर्त्तव्य है। हमारे समाज के लोगों ने धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में जन-जीवन की आवश्यकताओं से संबंधित विविध कार्यों में सदा से सार्थक सहयोग दिया है। साथ ही समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए हम प्रयत्नशील रहे हैं।

किसी भी संगठित समाज के पीछे एक उद्देश्य का बरगद लगाया जाता है यह धीरे-धीरे विशाल वृक्ष में परिवर्तित होकर उस समाज को छाया पुष्प एवं शीतलता तथा शान्ति देता है। समाज अच्छाई, बुराई का सम्मिश्रण होता है। बुराइयों की ओर बढ़ते कदम तथा बुराइयों को रोक कर अच्छाइयों की ओर समाज एवं प्राणी को उन्मुख करना समाज के जागृत व्यक्तियों का धर्म है। इसी हेतु सामाजिक संगठनों का कायाकल्प होता है। स्वस्थ समाज ही प्रभुत्व सम्पन्न देश का निर्माण करता है।

समाज के सामने विश्व की आधी जनसंख्या नारी संबंधी कई ज्वलंत समस्यायें हैं। परदा प्रथा में तो काफी कमी आई है। मूल समस्या नारी शिक्षा की है। साथ ही स्त्रियों को घर से बाहर निकलकर अपने समानता के अधिकार का उपभोग करने का है। उनके दोहरी-तिहरी उत्तरदायित्व निर्वाह का है। शिक्षित स्त्रियां स्वावलंबन की ओर बढ़ने लगी हैं। उनमें आत्मविश्वास की पर्याप्त मात्रा भी पाई जाने लगी है, किन्तु जैसी संभावना थी वैसा ही एक सच उभर कर सामने आया कि संक्रमण कालिक स्थितियों में विपरीत सभी स्थितियां भी पर फैलाती है। वर्षों से दबी-कुचली ने जब विकास की रोशनी पाई तो आंखें चौंधिया गई। युवा पीढ़ी अहम् भाव से भर उठी है। वे पारिवारिक सहभागिता से बदलने लगी है। कर्त्तव्यों को ताक पर रखकर अधिकार की बातें

करने लगी है। यह चिन्तनीय है कि उन्हें किस प्रकार सीह भागीरोहण करवाये जाये। देशकाल एवं परिस्थितियों के अनुसार कभी-कभी सामाजिक रीति रिवाजों में की गलत बातें भी जुड़ जाती है इनका निराकरण कर स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु सामाजिक संस्थाओं के मंच पर विचार-विमर्श आवश्यक होता है।

पीढ़ियों के अन्तर समाप्त कर युवा पीढ़ी एवं बालिकाओं को सही मार्गदर्शन के लिए सामाजिक सम्मेलनों की भूमिका रहती है साथ ही सम्बद्ध सामाजिक संगठनों का कर्त्तव्य भी है। खुले मंच से स्त्री एवं पुरुषों के पारिवारिक सामाजिक दायित्व के साथ निजी जीवन उत्कर्ष के यत्न में अपनी-अपनी क्षमताओं के उपयोग आदि प्रश्न विचारणीय होंगे। इन विषयों को निष्कर्षित कर एक सुदृढ़ निर्णय तक पहुंचना सामाजिक संगठनों का दायित्व है। सामाजिक संगठन साधारण व्यक्तियों का ध्यानाकर्षित करते हैं। सामाजिक रूप से अंध विश्वास एवं रूढ़िवादिता पर प्रहार कर सही-गलत का विचार करने एवं समाधृत सच स्वीकारने के लिए व्यक्ति को यहीं से उत्प्रेरित किया जा सकता है।

स्त्रियां पारिवारिक दायित्व में आज पुरुषों की सहयोगिनी है। जीवनयापन के लिए आवश्यक आवश्यकताओं के मूल्य में अप्रत्याशित वृद्धि ने महिलाओं को घर के साथ-साथ बाहर कार्य करने पर विवश किया है। इस प्रकार जहां उनके शिक्षा का सदुपयोग होने लगा है और पुरुषों को आर्थिक सहयोग मिलने लगा है वहीं उनको दोहरे दायित्व का पालन करना पड़ रहा है। इसलिए आज की मांग है कि पूर्व की रूढ़ियां तोड़कर पुरुष भी घरेलू क्षेत्र में पूर्ण सहयोग करे। यह परस्पर सहयोग की भावना सामाजिक मंच से संचालित होगा तो वैयक्तिक झिझक खुलेगी।

बालक-बालिका के उत्थान में सदा से स्त्रियों की मातृ भूमिका प्रमुख रही है। मां को बालक का प्रथम पाठशाला कहा गया है। स्त्रियां इस क्षेत्र में तीन भूमिकाओं माता, पिता एवं गुरु रूप का निर्वाह करती हुई परिवार, समाज, राज्य और देश का कल्याणकारी स्वरूप निर्माण करती हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या में समाज की इकाई व्यक्तियों को छोटे परिवार एवं सह संबंध की पूर्ण जानकारी अत्यावश्यक है। यह एक अनुत्तरित प्रश्न है। समाज से लेकर देश तक इससे जूझ रहा है। इस विषय पर सभी सामाजिक मंचों से गंभीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है, क्योंकि इसके समाधान की कई बातें सामाजिक मंच से जुड़े हैं। यथा विवाह योग्य आयु के वृद्धि एवं सीमित परिवार निर्माण की आवश्यकताओं, परिवार नियोजन में स्त्रियों की भूमिका अहम् होती है। दृढ़ता से पालन कर देश एवं समाज का कल्याण किया जा सकता है। यह सामाजिक मंच से स्पष्ट रूप से बताया जा सकता है।

सामाजिक सम्मेलनों के माध्यम से हम प्रत्येक व्यक्ति को यह समझा सकते हैं कि वह जिन गलत परिवहियों का निर्वाह कर रहा है उसे परिवर्तित करे। भले ही तुरंत प्रभाव न पड़े, लेकिन कालान्तर में उसके समझ में बात अवश्य आएगी एवं स्वस्थ परम्पराओं का निर्माण संभव होगा। अक्सर यहां देखा गया है कि कुछ लोग अन्दर ही अन्दर कुरीतियों के प्रति सुलगते रहते हैं, किन्तु सामाजिकता के निर्वाह की विवशता से उन नियमों का पालन करते चले जाते हैं। ऐसे में समाज में धीमी गति से विद्रोह सुलगने लगता है और विस्फोट की आशंका बनती है। सम्मेलन के माध्यम से लोगों में आत्मविश्वास जागृत कर सामाजिक दर से उन्हें छुटकारा दिलाया जा सकता है और कुरीतियां तजकर समय सापेक्ष मार्ग पर आगे बढ़ने का साहस संजोया जा सकता है।

सम्मेलन के अधिवेशनों में वर्तमान में उपस्थित अधिकतम समस्याओं पर चर्चा परिचर्चा एवं चिन्तन मनन कर समाधान खोजकर समाज को समय के संदर्भ में आधुनीकीकरण की ओर मोड़ा जाए। यह भूमिका सम्मेलन ही निर्वाहित कर सकता है। समाज को आधुनिकता से जोड़ते हुए, स्वस्थ परम्पराओं को अपनाते हुए, नये प्रस्तावों एवं विचारों का स्वागत करते हुए विशाल एवं ऊर्ध्वगामी समाज की रचना में सम्मेलन की भूमिका सर्वोपरि है। इन उपयोगिता को दृष्टि परक बनाकर ही आज विभिन्न समाज अपने लिए उन्नति एवं कल्याण मार्ग सम्मेलन के माध्यम से तलाश रहे हैं।●

++++++ ○○○○ ++++++

झूठ कर रहा राज

अपने ही देश में हम अपनी संस्कृति ढूंढ़ते आज,
सच पड़ा तहखाने में तो झूठ कर रहा राज।

लग रही है हर दिशा में स्वार्थों की आग,
वा मुंडेर पर है मुखर झूठ वाला काग।

नीति-मर्यादा की दे रहे थे जो कल तक दुहाई
कुर्सी के वास्ते उन्होंने मर्यादा ही खुद गंवाई।

खुद ही कठघरे में खड़ा है न्याय बांधे हाथ
सच पड़ा तहखाने में तो झूठ कर रहा राज।

जो कभी ईश्वर थे वो आज दागी बन खड़े है
मंदिरों और मस्जिदों पे खून के छींटे पड़े हैं।

कौन धोने आएगा इन पर लगे जो दाग
लग रही हैं हर दिशा में स्वार्थों की आग।

गलत हो रही बात कि झूठे का मुंह काला है,
लेकिन सच का भी अपना एक उजाला है।

बहुत सह चुके छल-कपट, अब सच का कौवा तू जाग
देख मुंडेर पर है मुखर झूठ वाला काग।

तुझको ही झूठों से अपना देश बचाना होगा,
संस्कृति, मानवता, नैतिकता को वापस लाना होगा।

राष्ट्र रक्षक, आलस्य का तू कर दे अब तो त्याग,
अपन ही देश में हम अपनी संस्कृति ढूंढ़ते आज
सच पड़ा तहखाने में तो झूठ कर रहा राज।

■ **श्रीमती कोमल अग्रवाल,** जूनागढ़

चलित चक्र

✍ शिवचरण मंत्री, अजमेर

सेठ मोतीलाल रात को सो नहीं सके थे। व्याकुलता से पूरी रात करवटें बदलते रहे। करवटें लेते-लेते उन्हें थकान हो गई। घनी रात में कोई यह पूछने वाला भी नहीं था कि सो क्यों नहीं रहे हैं। सेठ मन ही मन सोचते रहे कि कोई उन्हें पूछे कि वे सो क्यों नहीं रहे हैं तो अच्छा लगे। पर यह पूछता कौन? कोई हो तब तो, वह भी इतनी घड़ी रात में। उन्हें अपना समग्र कमरा थका-थका-सा लगा। कभी भी छलना न करने वाली नींद आज उनको छल रही थी। सेठ ने कभी किसी को छला नहीं। उनको भी किसी ने छला नहीं। पर आज नींद उनको छल रही थी। सेठ ने अपने जीवन के अब तक के छिहतर वर्ष आनंद से बिताये थे। पर आज उन्हें न जाने क्या हो गया था। मन की गहराई में कहीं कुछ ज्वाला धधक रही थी। दोपहर में दुकान छोड़ने के बाद से ही दोपहर में घटित घटना उनके मन में कांटे-सी चुभ रही थी। बंगले की सतही मंजिल का अन्तिम छोर का कमरा अभी जाग्रत था। तीन पुत्रों का भरा पूरा परिवार ऊपर व सतही तल के कमरों में सानंद सोया हुआ था।

घनी रात में कोई चिड़िया तक भी यह पूछने वाली नहीं थी कि आज इतनी रात बीते पापाजी के कमरे में लाइट क्यों जल रही है? मात्र लाइट ही नहीं उनके दिल में भी कुछ जल रहा था। दोपहर में दुकान में एक ग्राहक के साथ मोलभाव में हुई चिकचिक सुनकर बड़े बेटे रजनी ने कहा था, 'पापा, आपको इस धंधे का अनुभव नहीं है, अत: आप चुप रहें, अच्छा हो आप अब दोपहर बाद दुकान पर ही न आयें। आपके आने से ग्राहकी बिगड़ती है।'

बेटे की बात सुनकर सेठ स्तम्भित रह गये। कुछ समय बाद बोले : 'पागल कहीं के, मैं यह दुकान चलाते-चलाते बूढ़ा हो गया हूं। ग्राहकी जमाई है और आज बूढ़ा होने से काम का नहीं रहा।'

'पापा, आपके जमाने की बात अलग ही थी। रेडीमेड गारमेन्ट्स व्यवसाय में आज बड़ी प्रशिक्षक है अब यह आपके वश की बात नहीं है। कपड़े की फैशन और डिजाइन में भारी बदलाव आ गया है।'

'पापा, भाई साहब सही कह रहे हैं।' छोटे बेटे सुधीर ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा- 'ग्राहकों को भली प्रकार से निपटाने के लिए हम दोनों बहुत हैं। आपके समय के कपड़े के व्यवसाय की बातों से आज के रेडीमेड गारमेन्ट्स का व्यवसाय सुचारू रूप से चलना सम्भव नहीं। अब तो फैसनियंस भी हमारी दुकान पर खरीदारी करने को आते हैं।'

'मैंने जब यह दुकान शुरू की तब मेरा कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं था। मैंने दुकान की शुरूआत लकड़ी के एक केबिन से शुरू की और इसे एक बड़ी दुकान में बदल दिया। शनै: शनै: यह दुकान आज मोतीलाल शाह के नाम से हो गई। मैंने इस धंधे से कमाया, बंगला बनवाया, तुम्हें पढ़ाया, लिखाया, शादियां की और दुकान पर बैठाया अब तुमने इसमें कांच का पार्टीशन करवाकर नया फर्नीचर लगा दिया तो मैं पुराना व्यवसायी हो गया? मैं इसमें सेठ होने के लाय नहीं रहा।'

'हां पापा हां, आपने यह सब कुछ किया। पर आपने जो भी किया वह सब अपने लिए ही किया है। यह सब आपका ही काम था। हम लोग का क्या काम था? आपकी सम्पत्ति को सुरक्षित रखा है- रजनी ने कहा। 'मैं यह सब अपने साथ ले जाऊंगा।' सेठ ने लाल पीले होकर कहा। 'हमने पापा आपकी सम्पत्ति को आज तक सुरक्षित रखा है। इसके पश्चात् हम आपकी इस अमानत को अपने पुत्रों को सौंपे देंगे। हम भी इसे अपने साथ नहीं ले जायेंगे । बस !'

रजनी की बात सुनकर सेठ कुछ क्षण मौन रहे और फिर हाथों को मसलते हुए बोले, 'पर क्या दुकान को जमाने में मेरे परिश्रम का कोई महत्व ही नहीं था ? मैंने तुम लोगों के लिए यह सब एकत्रित किया, इसको सुरक्षित रखा और तुम्हें सौंप दिया। क्या तुमको यह मालूम नहीं?'

पिता की बात का उत्तर सुधीर ने देते हुए कहा, 'अरे पापा, यदि हम आपके नजायत किसी राजा के राजकुमार होते तो हेमराज्य मिला होता और राजा हमें अमानत में राज्य सौंपता। आपने जो कुछ हमारे लिये किया आपके पिताश्री ने क्या आपके लिए नहीं किया? 'क्या खाक किया। मैं तो अपने ही परिश्रम और विवेक से आगे बढ़ा हूं।' सेठ ने आंखें तरते हुए कहा। 'पर यह आपका धर्म और फर्ज था। हम इसमें कर भी क्या सकते थे?' सुधीर ने उत्तर दिया। 'मुझे यह सब समझाने की क्या आवश्यकता है? बहुत हो गया है।' सेठ गरजते हुए बोले। तो अब आप ही बतायें कि इस सम्पत्ति का वारिस कौन होगा? रजनी ने चुटकी ली। 'मैं भगवान के पास जाकर तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर मालूम करूंगा और बता दूंगा।' पांव पटकते सेठ चीखे और पेढ़ी से नीचे उतर पड़े।

यही विषाद सेठ की हड्डियों तक को बींध गया। सारे दिन सेठ को रजनी के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला। जिसका उत्तर आजीवन नहीं मिला उसका उत्तर भला एक रात में कैसे मिल सकता था? सेठ ने अपनी मनोव्यथा अपनी पत्नी जसुमति के फोटो के नीचे खड़े होकर व्यक्त की और उत्तर के लिए फोटो को देखने लगे। 'जसु, देख तो लेती ये लाडले मुझे क्या कह रहे हैं, क्या तेरे पास इनके प्रश्नों के उत्तर हैं? इतना कहकर वे वहीं जमीन पर ही बैठ गये और सुबह तक आंसू बहाते रहे। प्रात:काल सूर्य के प्रकाश में फोटो के नीचे लटक रहे कलेन्डर में यह पंक्तियां सेठ गुनगुनाते सुनाई पड़े- 'आज जो आपका है वह कल तक किसी और का था और वही कल तीसरे का होकर फिर किसी अन्य का होगा। परिवर्तन यह संसार का अचल नियम है।' गीता के इस सारांश में सेठ के प्रश्न का उत्तर था या समाधान इसी को समझने के लिए सेठ गीता का सारांश पढ़ते रहे।●

फर्क तब और अब का स्वतन्त्रता, स्वायत्तता, सम्मान के

✍ राजेन्द्र शंकर भट्ट, जयपुर

बात है तो लाल रंग की, लेकिन इससे हमारे मुंह गुलाबी नहीं हुए हैं। यही नहीं मिर्च जो स्वाद बढ़ाने के लिए होतीहै, हमें ऐसी लगी है कि उसकी ओर देखना मुश्किल हो रहा है। परंतु सही बात यह है कि मिर्च लगी इतनी कम को है कि उसके उपचार की किसी को चिन्ता नहीं है। यह भी एकदम सही नहीं है, चूंकि भारतीय मसाला बोर्ड ने कुछ न कुछ कार्रवाई की है। परंतु ऐसी संस्थाएं आग लगने पर उसे बुझाने भर के लिए नहीं होती, आग लगे ही नहीं, यह उनका दायित्व होता है।

बात अखबारों में बहुत आई है। भारत से भेजे गये मसाले, खासकर लाल मिर्च पिसी हुई, ब्रिटेन में अनुचित, स्वास्थ्य विरोधी, रोगकारक ऐसे सम्मिश्रण की दोषी पायी गयी है कि उसकी बिक्री पर रोक लगायी गयी है, और लाखों रुपये की दुकानों में रखी सामग्री को नष्ट किया जा रहा है।

यह वहां के उपभोक्ताओं और भारत के निर्यातकों तक सीमित प्रश्न नहीं है। यह इस पर विचार का अवसर है कि चीज चाहे जितनी कम या कम कीमत की हो, उसके व्यापार से सारे देश का नाम जुड़ा होता है। यह समय है जब हम भारत ब्रांड की प्रतिष्ठा की संसार व्यापक स्थापना की कल्पना तथा चेष्टाओं में है। ऐसी एक बदनामी हमारी हजार कोशिशें नाकाम कर देती है। यही बात नहीं है, भारत की बदनामी किसी भी तरह हो, उसका दोष सभी भारतीयों पर लगता है, उन पर भी जिनका संबंध इस उद्योग, व्यापार, निर्यात प्रक्रियाओं से नहीं है। भारतीय वस्तु के लिए जितना दंड मिलता है, उतना ही भारत का झंडा झुकता है।

इसका यह आधारिक संबंध सक्रिय इस प्रकार होता है कि जो मसाले भेजे गये उनकी निर्यात के पहले देखरेख के लिए जो शासनिक व्यवस्था थी वह सारी की सारी विफल हुई है- पर ज्यादा सही यह है कि वह भ्रष्ट इतनी है कि वह उन वस्तुओं की विदेशों में बिक्री में साझेदार बन गयी है जिन पर प्रतिबंध लगाना पड़ता है। मसाला बोर्ड है, निर्यात नियंत्रक अधिकारी हैं, देश के भीतर जांच की व्यवस्था है, सबके सब निष्क्रिय, निष्प्राण क्यों रहे कि ब्रिटेन में यह व्यापारियों का नुकसान करने वाली कार्रवाई हुई, और भारत की इतनी बदनामी हुई। वे समझ ही नहीं रहे कि भारत से निकली एक वस्तु के लिए बदनामी होती है तो भारत से निकली सभी वस्तुएं शंका और सम्मानहीनता में आती है, और देश की प्रतिष्ठा उसी अनुपात में गिरती है।

यह उत्पादन क्षेत्र में इस प्रकार से विचार की बात है कि जो उत्पादन होता है, वह जिस भूमि पर होता है उसके प्रति भी उत्पादकों के दायित्व होते हैं। उसी पर उनका जन्म होता है, उसी पर वे जीविकोपार्जन करते हैं, उसी के साधनों और सुविधाओं का उपभोग करते हैं- वे देश से धोखा करते हैं, तभी उनका किया विदेशों में आपत्ति में आता है। देश और उस पर उत्पादन का संबंध जितना परोक्ष दिखता है उतना ही यह साक्षात् है। अगर उसके बाहर भेजी कोई वस्तु अस्वीकार्य होती है तो वहां से निकली सभी वस्तुएं शंका में आती है।

यह परिस्थिति सामयिक चिन्ता अथवा जो दोषी है उन्हें दंड देने भर से नहीं सुधरेगी। देशभक्ति की दुहाई देने से भी काम नहीं चलेगा। सरकार की ओर से निरीक्षण की क्या बात करें, ब्रिटेन में जो लाल मिर्चों का अपमान हुआ, उसके निर्यात पर रोक का दायित्व उसी के अधिकारियों का तो था।

फिर हो क्या सकता है? स्वतंत्रता जब आती है, वह वास्तव में स्वतंत्रता कम करती है। जब परतंत्रता थी, उसे धोखा देना ही देशभक्ति थी। एक बार जय प्रकाश नारायण जेल से चुराकर कागज भेजते हुए पकड़े गए थे, उनके समर्थन में गांधी जी ने लिखा था। समय था जब सरकारी खजाने या शस्त्रागार की लूट भी जायज मानी जाती थी। हो यह गया है कि स्वतंत्र होने पर भी हमने परतंत्रता की उन आदर्तों को नहीं छोड़ा है। परतंत्रता जिन उपायों से परास्त हुई, अगर उन उपायों को नहीं छोड़ा गया तो स्वतंत्रता भी उनसे परास्त हो जायेगी।

स्वतंत्रता हर व्यक्ति पर दायित्व स्थापित करती है। व्यक्ति भटक सकता है, इसलिए समाज और उसकी व्यवस्था होती है। पहले होती थीं, अब भी कई बार ऐसे पंचायती निर्णय सामने आते हैं जो अमानवीय लगते हैं। इनसे मालूम देता है कि अभी भी कुछ पंचायतें अत्यंत प्रबल हैं। जो उत्पादन, उद्योग, व्यापार में लगे हैं, उन्हें अपने अपने वर्ग में प्रबल पंचायती प्रबंध पर विचार करना होगा। मिर्चों की बात लें तो उसका व्यापार और निर्यात करने वालों की ही पंचायत होनी चाहिए, कोई प्रतिनिधात्मक संस्था होनी चाहिए, जिस पर हर अनौचित्य को रोकने का दायित्व हो। स्वायत्त शासन हर स्वतंत्रता का प्राथमिक सोपान होता है। अवश्य उससे भी पहले आत्म नियंत्रण आता है। परंतु मनुष्य को बहता पानी माना गया है। रोक नहीं लगे तो वह अवश्य नीचे की ओर जाएगा। यह रोक शासन लगाये, यह दूरस्थ बात होती है, और स्वतंत्रता के पांच दशकों का हमारा अनुभव यह है कि इसमें शासन अधिकाधिक असफल होता जा रहा है। यहां इसके उल्लेख भर भी बात है। इलाज जहां रोग हो वहीं करना होगा।

यह सवाल उठाया जाए कि जो उद्योग व्यापार में हैं वे अपने समकक्षों पर हाथ कैसे उठायें। यह भी विचार का विषय है, इस पर भी विचार हो रहा है कि अभिभावकों को अपने बच्चों पर हाथ कितना उठाना चाहिए। अंतत: निष्कर्ष यह रहा है कि उचित आतंक तो बच्चों पर रहना ही चाहिए, जो समय पर वास्तविक दंड के बिना नहीं हो सकता। असल में आतंक से ही औचित्य का निर्वहन होता है। जो उद्योग-व्यापार वर्ग है उसमें निरंतर अनौचित्य से अपने को बचाने की चाह होनी चाहिए, जिसके विपरीत जाने पर दंड का भय होना चाहिए।

यह भी इतना ही सही है कि इसमें जितना कम हाथ शासन का होगा, उतना ही उद्योग व्यापार के लिए अच्छा होगा, लेकिन उसके लिए इस वर्ग को यह दायित्व स्वयं उठाना होगा। क्या किया जा सकता है इसे वर्ग, स्थान, संभावना आदि के आधार पर निर्णित करना होगा। परंतु इसके बिना काम नहीं चलेगा।●

सोने की नगरी में पानी की तलाश

✍ डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध', जयपुर

मरुस्थल में कला के-चरण कहां तक पहुंच गए हैं इसका पता तब लगता है, जब आप जैसलमेर नगर के छोटे बाजार को पार करके पत्थर के खंडजे की गलियों में पहुंचते हैं, जहां दोनों ओर सुन्दर विशाल हवेलियां झरोखों से झांककर या खिड़कियों की कनखियों से देखकर आगन्तुकों का अभिवादन करती हैं। जैसे कह रही हों, ''आइए, भीतर चले आइए, मैं कब से प्रतीक्षा में अकेलापन जी रही हूं।''

यों तो जैसलमेर जिला क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा जिला है, किन्तु सैलानियों के आकर्षण के कारण आज यह सभी सुविधाओं से सम्पन्न है, पानी की व्यवस्थाओं को छोड़कर। अनुमान है कि पहले यहां समुद्र था और उसके सूख जाने की प्रक्रिया के दौरान यह क्षेत्र वनों से भी आच्छादित रहा। बाद में प्राकृतिक, सूर्य ऊर्जा एवं आँधी-हवाओं के कारण धूल-धूसरित होकर वीरानी शक्ल में ढलता चला गया। पठारी क्षेत्र से यह प्रकृति के हाथों का खिलौना ही रहा, फिर भी कितना-कितना ग्लैमर और कैसा-कैसा सौन्दर्य बिखरा है विश्व प्रसिद्ध जैसलमेर नगर की हवेलियों के पार-द्वार। किसी गौरवपूर्ण पद्मिनी के अप्रतिम सौन्दर्य से कम नहीं है मूमल के देश का पारदर्शी रंग-रूप। किसी भी हवेली के भीतर बाहर से गुजरते हुए और विगत की परतें बिखेरते हुए लगता है, जैसे आत्म साक्ष्य हो रहा हो, किसी ने सुहागिया पीले ओढ़ने की चेहराई आँखों की खिड़की से कहीं झांक झांक लिया हो या स्वर्णिम धूप के आँगने में परिक्रमा लगाते हुए दर्पण ने पलका-सा मार दिया हो अथवा आँखों में अमलतास उग आए हों और सूखी-पपड़ाई-सी सोनल रेत में पीले पहाड़ बन गए हों। ऐसा सीमांत शहर है राजस्थान के सुदूर पश्चिमी अंचल में रचा बसा पीतवर्ण प्रस्तरों की भव्य एवं विशाल हवेलियों का नगर जैसलमेर।

दूरांचल का गीत-संगीत

जैसलमेर की हवेलियों की खिड़कियों से झांकती आकृतियों के अभाव, झरोखें पर टिकी दृष्टियों के बिम्ब और आँगनों के अंतरंग के कैनवास सभी तो सुरूचिपूर्ण हैं, सभी में सौंदर्य की छंटा से सजी संवरी है हवेलियों की देहयष्टि। पर्यटन से इतर सोचें तो ज्ञात होगा इस शहर की चार बातें प्रसिद्ध रही हैं- ''गढ़, झरोखा, गोठवा, चौथी सुंदर नगर।'' नगर की आधी आबादी का निवास गढ़ में है और गढ़ भी ऐसा कि जैसे पत्थरों की गढाई करके उन्हें एक पर एक रूप में रख दिया गया हो। गढ़ के नीचे शहरी बसावट के एक कक्षीय मकान में कुछेक परिजनों के बीच हुई बातों से कई तथ्य और उभरकर सामने आए हैं कि सालिम सिंह की विशाल इमारत एवं पटवों की हवेलियों, जवाहर विलास, बाल विकास और नथमल की हवेली के अतिरिक्त ऐसी और भी हवेलियां हैं जो आज भी हैं। यह भी कि प्राय: सभी हवेलियों की छतें खेर की लकड़ी से बनी हैं जिन्हें दीमक नहीं लगती और वे पानी एवं तापमान से प्रभावित नहीं होती। लोकभाषा में ऐसी छत को 'चियाल' कहा जाता है। नगर के बाजारों से गुजरते हुए शिमला के बाजार याद आते हैं, जहां पर्यटकों का पहुंचना निरंतर बना है।

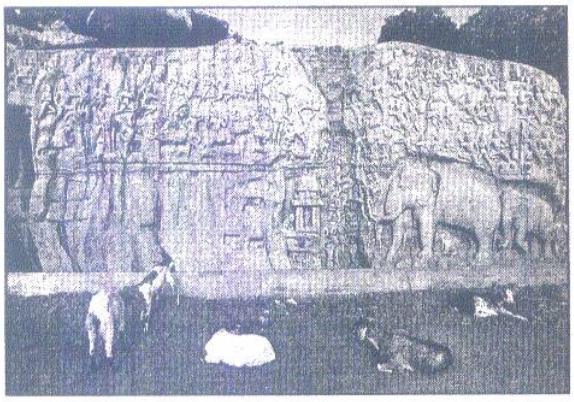

पानी की तलाश निरंतर

कभी जैसलमेर में डेयरी एवं ऊन का अच्छा व्यवसाय था, किन्तु प्राकृतिक प्रभाव की स्थिति में यहां के शिल्पकार-कलाकार सिंध चले गए। भारत बंटवारे के समय जो शिल्पकार सिंध पाकिस्तान चले गए, उनके तीन परिवार आज भी यहां हैं। एक तथ्य यह भी कि यहां की लंबी गौरवपूर्ण देहयष्टि की महिलाएं अपनी लावण्यमयी मुखाकृति से पहचानी जाती रहीं और ऐसे दूरांचल में भी सौन्दर्य का निवास था। जैसलमेर नगर की सभी इमारतों में ऐसी कोई इमारत नहीं, जिसमें नक्काशी का कार्य न हुआ हो। नगर से २० कि.मी. क्षेत्र में पीला पत्थर बहुतायत में उपलब्ध है और जेठवाई, मूल सागर, अमर सागर

एवं चूंदी में इस पत्थर की खानें हैं पीले लाल, नीले एवं सफेद रंगों में प्रकृति का मूल रंग पीला ही है, जिसने इस नगरी को 'स्वर्णनगरी' बना दिया है। यों भी पीला रंग चूंदड़ी पीले हाथ सुहाग हल्दिया रंग और सूरज की पहली किरण सभी में है।

जैसलमेर में गढसीसर तालाब पानी का सबसे बड़ा स्रोत रहा है और सरकार के प्रयत्नों से प्रारम्भ 'लाठी सिरीज बेल्ट' के अतिरिक्त पानी का कोई और जरिया अभी तक नहीं बना है। पहले यह शहर दुर्ग में ही बसा था और वहां अपनी जलप्रदाय व्यवस्था थी, किन्तु जब बाहर की कौमें यहां आई तो शहर की बसावट का सिलसिला शुरू हुआ। आज भी तीन चौथाई लोग दुर्ग में ही निवास कर रहे हैं। यदि 'डाबला ट्यूब वेल्स' एवं 'लाठी सिरीज बेल्ट' जैसी पेयजल व्यवस्था नहीं हो तो लोगों को यहां से पलायन करना पड़े। अब जैसलमेर में पानी का विकल्प इंदिरा गांधी नहर परियोजना ही है और इस दिशा में सार्थक प्रयास आवश्यक है। कभी जैसलमेर में बाग और तालाबों की भरमार थी और अमनचैन की इस नगरी में रेत के विस्तार के बावजूद पानी की तलाश का कोई लम्बा सिलसिला नहीं था। गढ़सीसर एवं डेडानसर बड़े तालाब थे तो गुलाब सागर एवं अन्य सरोवर भी थे, किन्तु सभी स्थलों पर आवासीय भवन बन जाने से इन सभी तालाबों का जल संग्रहण मार्ग प्राय: लुप्त हो चुका है और मलका, जीवण भाई, गजरूप सागर और किसन घाट के आसपास की तलैया भी सूख गई है। न शहर में पहले के बाग-बगीचे रहे और न तालाब-तलैइयाँ ही रहीं। शहर में सोना बरस रहा है, किन्तु पानी की तलाश तो आज भी जारी है।

++++++ ○○○○ ++++++

नारी जागृति

जागो जगा रहा हूं, ओ जागृति हमारी, अबला नहीं है सुन लो, भारत की आज नारी।
है संस्कृति हमारी उज्वल भविष्यवाली, नारी का रूप धरकर आई है शक्ति सारी।
कोई न टिक सकेगा विश्वास है हमारा, सारे जहां से उज्वल, इतिहास है हमारा,
संसार जानता है सृष्टिधात्री है नारी, नारी ने नर को, यही आरती हमारी।
जागो जगा रहा हूं, ओ जागृति हमारी, अबला नहीं है सुन लो, भारत की आज नारी।
ममता है आज नारी, पूजा है आज नारी, फिर क्यों कह रही है नारी बेचारी,
अरमान अपनी नारी, मुसकान अपनी नारी, जन-जन को आज देखो नारी है कितनी प्यारी।
अभी भावना का युग है, भावों में बह न जाना, भावुक बनी हुई है, भारत की आज नारी,
हर शाम आज अपनी, हर सुबह है हमारी, नारी ने पर बनाया, फिर क्यों यहां बेकारी।
जागो जगा रहा हूं, ओ जागृति हमारी, अबला नहीं है सुन लो, भारत की आज नारी।

मिलके कदम बढ़ाना सीखा है आज हमने, आंखें उठा के देखो, हर नर से आगे नारी,
आवाज दे रहा हूं, आओ कदम मिलाओ, मिलकर संवारो जग को, आ भारती हमारी।
सच्चाई सामने है, सतकर्म हो जहां में, उत्थान जग का होगा, जागी है जग की नारी,
अपमान क्यों हो उसका, सम्मान होना जिसका, संग्राम छिड़ चुका है, आगे बढ़ी है नारी।
जागो जगा रहा हूं, ओ जागृति हमारी, अबला नहीं है सुन लो, भारत की आज नारी।
विश्वास जब जीगर में, विह्वल करो ना दिल को, चमकेगा अब सितारा, शक्ति हमारी नारी,
मौसम बदल रहा है, सब कुछ बदल रहा है, अंजाम होंगे अच्छे नारी है अब अधिकारी।
'तुलस्यान' इस जहां में, बदलाव आ गया है, हर ओर हो उजाला, आशक्ति आज नारी,
सब साथ हो हमारा, हम साथ हो गए हैं, संकल्प लेना होगा, दुनियां है कितनी प्यारी।
जागो जगा रहा हूं, ओ जागृति हमारी, अबला नहीं है सुन लो, भारत की आज नारी।

■ **जगदीश प्रसाद तुलस्यान,** मुजफ्फरपुर

जश्न अनेक प्रकार के मनाते हैं

अब ऐसा सुन्दर जश्न भी मनाइये

हमें महिला दिवस मनाना बंद कर देना चाहिए। इसकी जगह राष्ट्रीय शोक दिवस मनाना चाहिए। हमें उस दिन मां के गर्भ में मार दी जाने वाली कन्या भ्रूणों के लिए दो मिनट का मौन रखना चाहिए। नाजियों ने यहूदियों को समाप्त करने की कोशिश की। भारत के अमीर और कुलीन लोग भी खामोशी से औरत जाति के खिलाफ यही कोशिश कर रहे हैं। जनसंख्या आयोग के नवीनतम विश्लेषण के अनुसार आसनसोल, कोच्चि और मदुरै को छोड़कर सभी महानगरों में ० से ६ वर्ष की श्रेणी में लड़कियों का अनुपात तेजी से गिरा है। अहमदाबाद, आगरा, कानपुर, अमृतसर, जबलपुर और फरीदाबाद में तो १९९१ और २००१ के बीच लड़कियों के अनुपात में ८० से ९० फीसदी की गिरावट आ गई है। दिल्ली में यह गिरावट ५० फीसदी की थीं। गर्भस्थ शिशु के लिंग परीक्षण पर रोक वाले कानून को आए अब कई वर्ष हो चुके हैं। दरअसल गर्भधारण के पूर्व शिशु लिंग का चुनाव भी अपराध है। सभी अल्ट्रा साउंड क्लिनिकों के लिए पंजीकरण जरूरी है। लिंग परीक्षण करने या लिंग जानकर गर्भपात कराने वाले डॉक्टर के खिलाफ मेडिकल कौंसिल भी कार्रवाई कर सकता है। वह डॉक्टर का पंजीकरण रद्द कर सकता है। पर इन सारे शोर शराबों के बावजूद कन्या भ्रूणों की हत्या में कमी नहीं आ रही है- दरअसल इसमें वृद्धि ही हो रही है।

दिल्ली नगर निगम के आंकड़ों के अनुसार दिल्ली के अस्पतालों में जनवरी से जून २००४ के बीच प्रति हजार लड़कों पर ८१९ लड़कियां ही जन्मीं (प्रति १००० लड़कों पर ९५० लड़कियों के जन्म को ही सामान्य माना जाता)। इसमें भी दक्षिणी दिल्ली का हाल सबसे बुरा है। वहां का औसत तो ७६२ ही था। रोहिणी में औसत ७८४, नजफगढ़ में ७९२, मध्य क्षेत्र में ८०५, शाहदरा में ८०४ और नरेला में ८०८ था। सिर्फ दिल्ली में करीब २१०० अल्ट्रा साउंड क्लिनिकों का पता सरकार को है। लिंग अनुपात में आ रही यह गिरावट बताती है कि ये क्लिनिक लिंग परीक्षण और उस आधार पर कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा देने का काम कर रहे हैं। कन्या भ्रूणों की हत्या बहुत ही गड़बड़ और सात परदों में होने वाली चीज है, इसलिए इसमें सही-सही आंकड़ा देना मुश्किल है। पर यह अनुमान है कि भारत में हर साल १५ से ५० लाख कन्या भ्रूणों को नष्ट कर दिया जाता है। नई तकनीक के आ जाने से नवजात कन्याओं की जगह कन्या भ्रूणों की और वह भी पहले से बहुत बड़ी संख्या में, हत्या शुरू हो गई है। और अगर आपको लगता है कि यह अपराध सिर्फ महानगरों में हो रहा है तो आप गलत सोचते हैं। देश के २०४ जिलों में लड़कियों का अनुपात राष्ट्रीय औसत से नीचे है। राष्ट्रीय औसत ९२७ है जबकि ४८ जिलों का औसत तो ८५० से भी कम है।

पंजाब के खाते-पीते समृद्ध घरों में लड़कियों की संख्या कम होने की सूचना से चिंतित अकाल तख्त के जत्थेदार जोगिन्दर सिंह वेदांती ने घोषणा की कि कन्या भ्रूण हत्या सिख धर्म के खिलाफ है और इसके दोषी पाए गए लोगों को पंथ से बाहर कर दिया जाएगा। पर अभी तक किसी ने एक भी व्यक्ति को पंथ से निकालने की खबर नहीं सुनी है। ये हवाई घोषणाएं कहां गईं? जनगणना के आंकड़ों का विश्लेषण बताता है कि विभिन्न धार्मिक समूहों में लिंग अनुपात के मामले में सिखों का अनुपात सबसे ज्यादा असंतुलित है। उनमें ० से ६ वर्ष के उम्र समूह में प्रति १००० लड़कों पर मात्र ७८६ लड़कियां ही हैं। पंजाब में हिंदू हों या सिख उनमें जमीन के प्रति इतना मोह है कि वे नहीं चाहते कि उनके यहां बेटियां हों और फिर जमीन में बंटवारा कर लें, अब जब पैतृक संपत्ति में लड़कियों को हिस्सा मिल गया है तब उनकी पूछ और घट गई है। जैन लोग अहिंसा और शांति को अपना सर्वोच्च मूल्य मानते हैं। उनके संत-महात्मा, मुंह-नाक पर कपड़ा रखते हैं और पैरों में जूता-चप्पल नहीं पहनते जिससे गलती से भी किसी जीव की हत्या न हो जाए, कोई सूक्ष्म जीव सांस के रास्ते भी अंदर जाकर मर न जाए पर गर्भ में पल रहे जीवन को लेकर इस समुदाय का नजरिया निश्चित रूप से ऐसा

नहीं है। कन्या भ्रूण हत्या और खराब लिंग अनुपात में सिखों के बाद उनका ही नंबर आता है। उनमें प्रति हजार लड़कों पर लड़कियों की संख्या सिर्फ ८७० है।

मुल्क में मुसलमान ज्यादा बच्चे पैदा करने के लिए और औरतों के प्रति 'ज्यादा क्रूर' होने के लिए बदनाम हैं। पर सभी धार्मिक समूहों में लिंग अनुपात के मामले में उनका रिकार्ड सिखों, जैनों, हिंदुओं और बौद्धों से भी बेहतर है। ईसाइयों में यह अनुपात ९६४ है जो सबसे अच्छा है। मुल्क के करीब आधा दर्जन प्रदेशों में दो बच्चों वाला जो नियम इधर लागू हुआ है उसने समस्या को और गंभीर बनाया है। भारत में बेटों की चाह के बारे में काफी कुछ कहा जा चुका, कहा जा सकता है। तो 'हम दो, हमारे दो' का जो नारा परिवार नियोजन योजना के शुरू से लग रहा है उसमें एक लड़का और एक लड़की का मॉडल रखा गया था। पर अब यह बड़ी जल्दी से सिर्फ दो लड़कों की चाह का रूप ले चुका है। लड़के न सिर्फ मां-बाप को 'मुक्ति' देते हैं बल्कि उन्हीं से वंशवृद्धि भी मानी जाती है। दहेज ने लड़कियों को बोझ बना दिया है। बल्कि प्रसव पूर्व लिंग परीक्षण पर रोक के पूर्व इस तकनीक के पक्षधर हरियाणा के विभिन्न हिस्सों में यह नारा प्रचारित करते थे कि अभी ५००० खर्च करो (लिंग जांच और गर्भपात पर) और आगे के ५ लाख (दहेज) बचा लो। जब लिंग परीक्षण और गर्भपात के खिलाफ सख्ती बढ़ी है तो यह फीस पांच हजार से बढ़कर दस हजार हो गई है। यह रकम अग्रिम दी जाती है। अगर जांच में भ्रूण लड़के का हुआ तो ६५०० से ७००० रुपये वापस कर दिए जाते हैं। लगता है कि अब केन्द्र सरकार को भी दो बच्चे वाले नियम की सीमाएं समझ आने लगी हैं। हाल में दिल्ली हाई कोर्ट में दायर एक जनहित याचिका में जब उसे जवाब देना पड़ा तो उसने कहा कि परिवार कल्याण कार्यक्रम में दो बच्चों की सीमा नहीं है और पति-पत्नी अपनी इच्छा से बच्चों की संख्या कम-ज्यादा रख सकते हैं। यह कार्यक्रम 'स्वैच्छिक' है और सरकार कोई केन्द्रीय तथा निर्धारित लक्ष्य वाला कार्यक्रम नहीं चलाना चाहती। परिवार का आकार क्या होगा यह फैसला निर्माण भवन में नहीं घरों के अंदर स्वतंत्र ढंग से होगा।

ऐसे में सरकार और नागरिक समाज, दोनों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है लोगों की सोच में बदलाव करना। लड़के-लड़कियों को समान दर्जा देना और कन्या भ्रूण की हत्या रोकने के लिए लोगों को सचेत बनाने की जरूरत है। फिर प्रसव पूर्व लिंग परीक्षण के बाद कन्या भ्रूणों की हत्या रोकने वाले कानून को सख्ती से लागू करने की जरूरत है। देश भर में २५५६९ अल्ट्रा साउंड क्लिनिक पंजीकृत हैं-बिना पंजियन के चलने वाले क्लिनिकों का हिसाब किसी को भी पता नहीं है। और गुम होती लड़कियां, गिरते लिंग अनुपात के सारे शोर-शराबे के बावजूद तथ्य यह है कि कन्या भ्रूण के गर्भपात के सिर्फ ३०८ मामले इस साल जनवरी तक पता चले और उनमें से एक भी आदमी को अभी तक सजा नहीं हुई है। जो मामले दर्ज हुए उनमें से ८० फीसदी मामलों में क्लिनिक पंजीकृत नहीं थे। अन्य मामले लिंग परीक्षण के विज्ञापन, भ्रूण का लिंग बताने और रिकार्ड न रखने जैसे थे।

टेनिस में सानिया मिर्जा और लंबी कूद में अंजू जार्ज की सफलता पर मुल्क भर में जश्न मना। व्यापार के क्षेत्र में किरण मजुमदार शॉ की सफलता का उदाहरण बनने योग्य है। अरुणा राय और अरुंधति राय की सफलताएं और काम भी उल्लेखनीय हैं। टीवी की दुनिया में, पत्रकारिता की दुनिया में, विज्ञान और तकनीकि में, फैशन और फिल्मों में लड़कियों का काम और सफलता आज अपवाद जैसी नहीं रह गई है। पर अगर उनकी मांओं ने भी कन्या भ्रूण की हत्या करवा दी होती तो आज वे कहां होतीं। ऐसे में अब वक्त आ गया है कि हम लड़कियों की घटती संख्या का शोक मनाने की जगह उनके जन्म का जश्न मनाएं। आई लक्ष्मी का आदर करें। (साभार : हिन्दुस्तान)

++++++))))) ++++++

यह शहर

बीज बोयें प्यार के, पर उगे अंकुर नहीं,
बांझ हो गये इस शहर पे प्यार का असर नहीं।

सहमे-सहमे रास्ते, डरी-डरी है हर गली,
आप कहते हैं मगर, इस शहर में डर नहीं।

छटपटाते इस शहर की, कोई तो तड़पन पढ़े,
दिल को बहलाने के लिए, ये कोई मंजर नहीं।

आपके इस शहर में, रोटी मिलेगी हर एक को,
पर अपने गांव का, इतिहास भी बंजर नहीं।

हर कोई गुमराह है, इस शहर में आजकल,
राह दिखलाये इन्हें, ऐसा कोई रहबर नहीं।

देख ली मैंने सजावट, इस शहर की दोस्तों,
हर तरफ मकान है, पर एक भी घर नहीं।

■ कालीप्रसाद जायसवाल

सब सूं बड़ी बात

✍ प्रहलाद श्रीमाली, चेन्नई

लिखणो बड़ी बात कोनी। बड़ी बात है छपणो। तो लेखक री रचनावां प्रकाशित होवण लागी। अर वो मानण लागो कै आ बड़ी बात है। रचना छपती अर सागै लेखक रो नांव ई। वो देखतो नै राजी होवतो। कै वाह ! कित्ती बड़ी बात है आ। भाई- भायलां नै ई जमावतो। वे मुळकता थकां बड़ी बात आळी बात मंजूर करता। लेखक नै सुख मिलतो। साथै ई शंका पण उपजती। कठैई इणां री मुळक में व्यंग तो कोनी। चिंतनशील प्राणी रै लारै आ ईज तो अबखाई। हरमेस आशंका में रवणो पड़े। कठई उणरै मुखारबिंद सूं निकळी प्रार्थना नै पण भाई लोग व्यंग्य नीं मान लेवै। दूजी कानी कोई उणसूं अरदास करे तोई पण खटको रवै। आगलो कठेई व्यंग तो नी कर रैयो। अलबत्ता व्यंग करणो व्यंगकार आपरी बपोटी मान'र ईज चाल रैया है। खैर।

लेखक ने चोखो लागतो के रचनावां लगोलग छप रैयी है। पण एक बात खटकती। लेखक मैसूस करतो कै पत्र-पत्रिकावां में छपण आळा दूजा लोकां रै मुकाबले वो घणो लारे है। घणकरा लेखक आपरा परिचय में पाव दर्जन सूं ले 'र डेढ़ दर्जन तांई पोथियां प्रकाशित होवण रो लेखो लिखता। उणां मांय सूं केई लेखकां री कीं पोथियां तो पुरस्कृत पण होवती। बांच'र लेखक रा काळजा माथै सांप लोटता। कुठा मार्‌यो वो शंका करतो। अै वो खालमी हांक रैयो है। इच्छा उळारी मारती। अब कै किणी रचना सागे परिचय पेटे चार-पांच पुस्तकां प्रकाशित होवण रो उल्लेख झाड़ देस्यूं। पण हिम्मत नीं हालती। पोल खुल जावण रो भौ सतावंतो। अबै लेखक नै साव मेसूस होवण लागो। पत्र-पत्रिकावां में रचना छपणी कोई बड़ी बात कोनी। बड़ी बात है आपरी रचनावां रो संग्रह प्रकाशित होवणो। पोथी प्रकाशित करावण में जबरी कसरत करणी पड़ै। शारीरिक कसरत सूं डील री मांस-पेशियां में मजबूती अर कसावट अवै। पण इण कसरत में नुंवा लेखक ने आपरी गांठ ढीली करणी पड़ै। जिण सूं करने थोड़ी-घणी आर्थिक कमजोरी आवण रो पूरो चांस रवै। इण अबखाई सूं पार पड़ने ई छेवट लोक पोथी छपाई। अबै लेखक आपरी एक ताजी रचना एक पत्रिका नै भेजी। अर परिचय में उछाव सागे एक पोथी प्रकाशित होवण रो डंको ठोक दियो। पण रचना छपी कोनी। संपादक रा खेद सागै पाछी आयगी। लेखक रा कंवळा हिवड़ा रै कड़क ठेस पूगी। संपादक जाणै किण भव री दुस्मणी काडी ही। इण पत्रिका में तो लेखक री मोकळी रचनावां आय चुकी ही। चिंतन कर्‌यां लेखक नै ठा पड़ी। पोथी छपणी बड़ी बात नीं है। बड़ी बात है पोथी पुरस्कृत होवणी।

लेखक जुद्ध स्तर माथै लाग गयो। तमाम पुरस्कारवती साहित्यिक संस्थावां नै आपरी पुस्तक री प्रतियां भेज दी। जठै-कठै गुंजाइश निकळी उठै ओळखाण- पिछाण रो लीरो ई रगड़ियो-घिसियो। ओ लेखक रै आगला भव रो पुण्य प्रभाव हो कै पछै इण जलम रो ताकड़ो तिकड़मी प्रयास। एक नामी संस्था बींरी पोथी पुरस्कृत घोषित कर दी। लेखक रो जीव घणो सोरो हुयो। उण उमंगभरी सांस लीवी। इब देश री सगळी पत्र-पत्रिकावां में इण कृति री चरचा चालसी। सबां री जुबान माथै इणरो नांव होसी। पुस्तक री घणी डिमांड रैवेला। प्रकाशक पट्टो दूजोड़ो संस्करण काडण री त्यारियां करसी अैड़ी हालत में लेखक तकड़ी रॉयल्टी वसूल करण री तेवड़ली। वो बिना पांख्यां उडबा लागो। पण संस्था द्वारा एक सादा-सा समारोह में पुरस्कृत होवतांई झटका सूं नीचे ठिकोणो। पुरस्कार पेटे अखबार रै मांयला खूणा में दो लेणा री खबर ही। कुजोग सूं जिणमें लेखक रो नांव ई साव नीं छप्यो।

लेखक हार नीं मानी। शहर रा सगळा साहित्यिक तत्वां नै आपरी पोथी री एक-एक प्रति भेंट कर नाखी। इण जाणकारी सागै कै आ महताऊ कृति अबार ताजी तर पुरस्कृत हुयी है। सबूत में वो संस्था सूं मिळयोड़ो सनमान पत्र पण देखावंतो गयो। भाइड़ा देखता, चौंकता, मुळकता, बधाई देंवता अर एहसान करता थकां पोथी स्वीकारता। अबै जा'र बोध हुयो। पुस्तक पुरस्कृत होवण में कोई बड़ाई कोनी। वास्तव में बड़ी बात है पोथी चर्चित होवणी। अर पोथी चर्चित होव है आलोचकां री कृपा सूं। ओ तथ्य लेखक लेखन में दखल करण सूं पैली ई जाणातो हो। पण एन मौका माथै भान कोनी रैयो। खैर अबै ई खरी। लेखक नेहचो मिळयो।

पोथी री प्रतियां ठावकी पत्र-पत्रिकावां ने भेजण में लेखक गजब री फुर्ती राखी। उणनै भरोसो हो। दो-चार महीनां में देश री तमाम ओपती पत्र-पत्रिकावां में इण किताब री समीक्षा छप जासी। पुस्तक पुरस्कृत है। सो आलोचकां-प्रशंसकां रै बिचाळै गंभीर- रोचक बहस छिड़ैला। जणे पोथी रा जिक्र सागै म्हारो नांव ई बारम्बार छपेला। अबै प्रसिद्धि पावण में देर नीं। लेखक पाछो उडवा लागो। पण आठ-दस महीना बीत गया। बस कीं पत्र-पत्रिकावां री पुस्तक-प्राप्ति सूची में लेखक री पोथी रो नांव भर हो। लेखक रो धीरप अमूजण लागो। उणे ध्यानं लगायो, चिंतन कर्‌यो। अर बींरी चेतना जागी। वो आपरी पोथी ले'र जूना-जाणीता आलोचक री शरणां पूगो। वां री आलोचना तणों आतंकआखा देश में हो। लेखक वां सूं आपरी पोथी री आलोचना करण री अरदास करी।

वे व्यावहारिक सुर में बोल्या, 'यूं कियां खालमी आलोचना कर देवां। पोथी री आलोचना करणी कोई हंसी खेल थोड़ी है। ओ तो एक गंभीर अनुष्ठान है। अर यज्ञ- अनुष्ठान जेड़ा महान कर्म फगत बातां सूं संभव कोनी। ज्यूं कथा-कीर्तन, पूजा-पाठ, जप-हवन यज्ञ-महायज्ञ रा जूदा-जूदा एस्टीमेट होवे है। त्यूं ईज आलोचना री पण न्यारी प्यारी ओपती डिग्रियां हैं। आप जिण डिग्री री आलोचना चावोला उणी हिसाब सूं खर्च बैठसी। फर्स्ट डिग्री आलोचना सूं आपरी पोथी री पूग फगत बुद्धिजीवी पाठकां तक होवेला। सैकेण्ड डिग्री आळी आलोचना होवतांई आप पाठक, जिणां नै चालू पाठक पण कैवां हां, आपरी पोथी मोलावेला। अर थर्ड डिग्री आलोचना रो असर तो बस पूछो ई मत। स्कूल कॉलेज रा छात्रां सूं ले' र ट्रक टैक्सी-ड्राईवर तकात आपरी पुस्तक वास्ते बुक-स्टाल माथै टूट पड़ैला।'

लेखक संकोच सागै कैयो, 'पण सा, पेली आप पोथी बांच तो लो। डिग्री बाबत चर्चा पछै कर लेस्यां।' सुण'र वे वटकिया। अबकै वां रा अंदाज में हिकारत ही, 'भला मिनखां। क्यूं खालमी टेम बरबाद कर रैया हो। पेली सूं ई म्हारै कनै मोकळो आलोचकियो काम पैंडिंग पड़ियो है। म्हे पोथी बांचण बैठ गयो तो पछै आलोचना कुण करसी भाई। पोथी तो पाठक बांचैला। अर वा ई म्हारी आलोचना माथै ठावकी चर्चा हुयां पछै। अर हां चर्चा करावण रो खर्चो अलग पड़ैला।'

आलोचक जी रा बेबाक वचन सुणताई लेखक री मोह-भंग हुयो। आलोचना करावणतणी समूळी खाज मिटगी। सृजन अर आलोचना री गरिमा-महिमा रै आंतरा रो ज्ञान मिळयो। लेखक अबै लिखणो छोड़ दियो है। अबकाळै वो प्रचण्ड आलोचक बणवा रा नुस्खा बटोर रैयो है।●

समाज सुधार बनाम पीढ़ियों की दूरियां : एक दृष्टिकोण

✍ कंपूरचन्द पाटनी, जोरहाट

एक पाश्चात्य विद्वान दार्शनिक एल्डुअस हक्सले ने कहा है कि 'मैं समाज को बदलना व सुधारना चाहता था' परंतु मेरे जीवन का यही सबक है कि केवल व्यक्ति अपने आपको ही सुधार सकता है, दूसरे को नहीं।' आजकल के विषम वातावरण में यह समझा जाना चाहिए कि व्यक्ति या समाज को सुधारने का प्रयत्न कुत्ते की पूंछ को सीधा करने के प्रयास के बराबर है। बहुधा देखा जाता है कि सभा-संस्थाएं अपने-अपने सदस्यों के मार्गदर्शन हेतु संदेश एवं आदेश भेजा करती हैं। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने तीसरे अध्याय में समाज-सुधार हेतु यही संदेश दिया है कि सारा समाज अपने नेताओं व श्रेष्ठ व्यक्तियों के आचरण का अनुपालन करता है :

''यद्यदाचरति
श्रेष्ठस्तदेवतरो जनः।
स यत्प्रमाण कुरुते
लोकस्तदनुवर्तते ।।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने-अपने स्तर पर अपने आचरण व आचार संहिता को सूक्ष्म रूप से देखें एवं जहां दोष या विकृति लगे उसे दूर करने का भरसक प्रयत्न करें। जहां तक समाज के शीर्षस्थ व मूर्धन्य लोग आज की बदलती हुई परिस्थितियों से वाकिफ नहीं होंगे एवं उनका ध्यान अवांछनीय प्रवृत्तियों की ओर नहीं जायेगा तब तक न तो उदात्त वृत्तियों को अपने जीवन में उतार सकेंगे और न ही समाज के लिए मार्गदर्शक बन सकेंगे। अतः आज के द्रुतगति से बदलते हुए परिवेश में समाज के नेतृस्थानीय व्यक्तियों को अपने आपको बदलना होगा तभी समाज में सुधार व बदलाव लाया जा सकता है।

भारत में अनादिकाल से यही परंपरा चली आ रही है कि गुरुकुल की शिक्षा एवं परिवार के उच्च मूल्यों से बालक-बालिकाओं को समुचित शिक्षा व मार्गदर्शन मिल जाया करते थे, परंतु अब वे प्रथा-प्रणालियां नहीं रही जिसके कारण आज लोग सार्वजनिक मंच पर सिर धुनते हैं कि समाज में सुधार की आवश्यकता है। परंतु वे कभी भी अपनी कमी न महसूस करते हैं और न स्वीकार। सर्वप्रथम मंच पर बोलने वाला स्वयं अपना सुधार कर समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत करे ताकि उस श्रेष्ठ आचरण का लोग पालन कर सकें।

चाणक्य के बारे में एक किंवदन्ति प्रसिद्ध है कि उसके घर रात के ९ बजे कोई मिलने हेतु गया तो उसने देखा कि चाणक्य एक दीपक बुझा रहा था एवं तत्काल दूसरा जला रहा था। आगंतुक के कौतूहलवश पूछ लेने पर चाणक्य ने उत्तर दिया 'पहला दीपक सरकारी कामकाज के लिए मुझे राज्य की तरफ से मिला है और दूसरा मेरा निजी है। चूंकि अब मैंने राजकीय कार्य बंद कर दिया है, इसलिए निजी दीपक जलाया है।'

इस छोटी-सी किंवदन्ति से हम न केवल शासन वर्ग के नियंत्रण हेतु बल्कि आत्मनियंत्रण हेतु कितनी बड़ी शिक्षा ले सकते हैं। भारतीय इतिहास व वांगमय इस प्रकार के प्रसंगों से भरा पड़ा है। अतः हमलोगों का एक मात्र कर्त्तव्य है कि पहले हमलोग अपने चरित्र एवं आचरण स्वयं सुधारें। उससे आदर्श स्वयं सामने आ जायेगा। चाहे उपनिषदों के नचिकेता का प्रसंग हो अथवा महाराणा प्रताप के घास की रोटी का- भारतीय इतिहास के पन्ने ऐसी गौरवमय गाथाओं से सराबोर हैं।

''आज एक और प्रमुख समस्या का हमें सामना करना पड़ रहा है जिसके कारण समाज टूटने के कगार पर है- यह समस्या है युवाओं एवं प्रौढ़ों में बढ़ता हुआ वैचारिक असंतुलन। पीढ़ियों में बढ़ती हुई दूरियों के कारण कई प्रकार की सामाजिक समस्याएं व विषमताएं उत्पन्न हो रही हैं। यदि यह ऐसे ही प्रबल होती रही तो एक दिन इन सामाजिक समस्याओं के चलते व दोनों पीढ़ी के बढ़ते असंतुलन की खाई से यह समाज टूट कर बिखर जायेगा।''

आज एक और प्रमुख समस्या का हमें सामना करना पड़ रहा है जिसके कारण समाज टूटने के कगार पर है- यह समस्या है युवाओं एवं प्रौढ़ों में बढ़ता हुआ वैचारिक असंतुलन। पीढ़ियों में बढ़ती हुई दूरियों के कारण कई प्रकार की सामाजिक समस्याएं व विषमताएं उत्पन्न हो रही हैं। यदि यह ऐसे ही प्रबल होती रही तो एक दिन इन सामाजिक समस्याओं के चलते व दोनों पीढ़ी के बढ़ते असंतुलन की खाई से यह समाज टूट कर बिखर जायेगा। समाज मनुष्य की प्रथम आवश्यकता है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और मनुष्यों से ही समाज है अर्थात् यह एक-दूसरे के पूरक हैं। अतः समाज के विघटन का प्रभाव देश की प्रगति पर भी पड़ेगा जिससे राष्ट्र सुदृढ़ नहीं हो पायेगा। परिवार से समाज, समाज से राज्य व राज्य से एक राष्ट्र बना हुआ है। अगर राष्ट्र को सुदृढ़ बनाना है तो परिवार को सुदृढ़ बनाना होगा। उसके विघटन को रोकना होगा और यह तभी संभव होगा जब दोनों पीढ़ियों में आपसी सामंजस्य अच्छा होगा, दोनों एक-दूसरे के परिपूरक बनकर आपसी तालमेल से कार्य करेंगे।

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

महिला शक्ति, राष्ट्र शक्ति है : डॉ. गिरिजा व्यास

डॉ. गिरिजा व्यास ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित सम्मान गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि राजस्थान की सुगन्ध आपका समाज सम्पूर्ण देश में बिखेर रहा है। बंगाल की धरती सोना है। शेखावाटी की मिट्टी हर जगह 'मील का पत्थर' साबित हुई है। उन्होंने 'चलो गाँव की ओर' का नारा देते हुए कहा कि देश के गाँव-गाँव में फैली महिलाओं की समस्याओं की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि शुरू से ही महिलाओं के खिलाफ हो रहे अत्याचार के विरुद्ध मैं लगातार काम करती आ रही हूं। अगर आप सभी साथ देवें तो अब बहुत दिनों तक यह अत्याचार का सिलसिला नहीं रह जाएगा। महिलाओं को शिक्षित एवं आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने की आवश्यकता है। अगर महिलाएं सशक्त होंगी तो देश शक्तिशाली होगा। सदियों से पिछड़ी महिला समाज को आगे लाने की जरूरत है। उन्होंने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रशंसा में कहा कि यह संस्था राष्ट्रीय स्तर पर बदलाव लाना चाहती है।

सम्मेलन अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान सम्बोधित करते हुए

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कम शब्दों में बहुत कुछ बोलते हुए कहा कि ''आज का दिन ऐतिहासिक दिन है।'' आज हमारे बीच महिला आयोग की अध्यक्ष डा. व्यास उपस्थित हैं। मुझे खुशी होती है कि मारवाड़ी समाज की महिलायें आज हरेक क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने डा. व्यास को सम्बोधित करते हुए कहा कि सम्मेलन इनका है एवं ये सम्मेलन की अपनी हैं, इसलिए न इनकी और न ही सम्मेलन के परिचय की आवश्यकता है।

सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका संचालन करते हुए

सम्मेलन ने शुरू से ही नारियों के उत्पीड़न के विरुद्ध आन्दोलन किया है। पर्दा प्रथा, नारी शिक्षा, दहेज, तलाक आदि ज्वलंत सामाजिक प्रश्नों पर सम्मेलन ने लगातार कार्यक्रम हाथ में लिए हैं। श्री शर्मा ने आज टूटते परिवार पर चिन्ता व्यक्त की एवं कहा कि इसे महिलाएं रोक सकती हैं। उन्होंने अध्यक्षा महोदया को महिलाओं की समस्याओं के बारे में भरोसा दिलाया कि सम्मेलन की जहां भी आवश्यकता होगी वहां हम आपके साथ रहेंगे।

सभा का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने फूल का गुलदस्ता देकर डॉ. व्यास का स्वागत किया। संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने सम्मेलन साहित्य डॉ. व्यास को भेंट किया।

पश्चिम बंगाल के महिला सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती विमला डोकानिया ने धन्यवाद देते हुए कहा कि हम सभी औरतों की एक जात है। हमारी समस्याएं राष्ट्र की समस्याएं हैं।

सभा में सर्वश्री प्रेम चन्द सुरेलिया, वंशीलाल बाहेती, जयगोविन्द इन्दोरिया, सत्यनारायण अग्रवाल, लोकनाथ डोकानिया, मदन गोयल, गौरीशंकर सिंहानिया, कलकत्ता जी.पी.ओ. के डायरेक्टर श्री गुप्ता जी एवं बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित थीं।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

भवानीपटना : अग्रसेन भवन का उद्घाटन सम्पन्न

२४ अप्रैल। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने मारवाड़ी पंचायत द्वारा भवानीपटना में नवनिर्मित अग्रसेन भवन का उद्घाटन स्थानीय गणमान्यों की वृहद् उपस्थिति में किया। सम्बलपुर से १५ कि.मी. दूर भवानीपटना एक ग्रामीण क्षेत्र है जहां लगभग सौ मारवाड़ी परिवार बसते हैं। इन्हीं परिवारों ने मिलकर ५० लाख रुपये से इस भवन का निर्माण करवाया है। ज्ञातव्य है कि भवन की भूमि यहीं रह रहे एक मारवाड़ी परिवार ने अनुदान स्वरूप प्रदान की थी। भवानीपटना के मेयर ने इस अवसर पर कहा कि अग्रसेन भवन भवानीपटना का मुख्य आकर्षण होगा और प्रति वर्ष सांस्कृतिक अनुष्ठानों के सम्पादन में इसकी भूमिका प्रशंसनीय और दीर्घकालिक होगी। निश्चित रूप से स्थानीय समाज इससे लाभान्वित होंगे।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन

श्री कन्हैयालाल बाकलीवाल पंचतत्व में विलीन

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के नव-निर्वाचित अध्यक्ष श्री कन्हैयालालजी बाकलीवाल का निधन ८ मई २००५ को भारतीय समयानुसार अपराह्न ३.३० बजे अमेरिका के डल्लास शहर में हो गया। स्व. बाकलीवाल को मुंह के भीतर कैंसर की आशंका थी, जिसका हाल ही में मुंबई में आपरेशन करवाया गया था। मर्ज बढ़ते जाने के कारण उन्हें अमेरिका ले जाया गया। वहां परीक्षण चल ही रहा था कि हृदयाघात के कारण वे इहलोक से विदा हो गये। १० मई की शाम अमेरिका में ही इनका अन्तिम संस्कार कर दिया गया। पूर्वोत्तर में कई स्थानों पर उनके शोक सम्मान में बाजार और व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद रहे। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के लिए यह एक बहुत ही गहरा आघात है जिसकी क्षति पूर्ति अत्यधिक कठिन है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं समाज को उनसे बहुत आशा थी। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन कन्हैयालालजी बाकलीवाल के निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है एवं दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी सहानुभूति रखता है।

गोलाघाट : स्व. कन्हैयालाल बाकलीवाल की याद में शोकसभा

१४ मई। गोलाघाट शाखा द्वारा एक सभा का आयोजन कर सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष कन्हैयालालजी बाकलीवाल के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया गया। सभा की अध्यक्षता शाखाध्यक्ष श्री नागेन्द्र शर्मा ने की। उपस्थित सभी सदस्यों ने स्व. बाकलीवाल के आकस्मिक निधन को समाज की अपूरणीय क्षति करार दिया। स्व. बाकलीवाल के सामाजिक अनुदानों की चर्चा के पश्चात् मौन रखकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई एवं उनके परिवार के प्रति ईश्वर से प्रार्थना की गई।

झारखंड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

देवघर : श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया का अभिनन्दन

झारखंड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन - देवघर जिला इकाई की एक बैठक १०.४.२००५ को दिगम्बर जैन मंदिर के सभागार में हुई जिसमें झारखंड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के २००५-२००७ के लिए नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया का समाज की विभिन्न संस्थाओं, अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच, महिला सम्मेलन संघ, दिगम्बर जैन समाज, श्याम कीर्तन मंडल एवं अन्य संस्थाओं एवं व्यक्तियों द्वारा भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

आगामी प्रान्तीय अधिवेशन देवघर में कराने का निर्णय लिया गया। जिसके लिए १० एवं ११ सितम्बर २००५ की तिथि निश्चित की गई। साथ ही स्वागताध्यक्ष पद के लिए श्री त्रिलोकीचंद बाजला एवं स्वागत मंत्री के लिए श्री अभय कुमार सर्राफ का चयन किया गया।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पटना : कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

२४ अप्रैल २००५, नई कार्यकारिणी की प्रथम बैठक प्रादेशिक अध्यक्ष श्री कैलाश प्र. झुनझुनवाला की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में अध्यक्ष महोदय ने कहा कि कार्यकारिणी समिति का पूर्ण गठन कर लिया गया है। तिरहुत प्रमंडल के उपाध्यक्ष श्री नवल किशोर सुरेका ने कहा कि तिरहुत में प्रथम प्रमंडलीय अधिवेशन होगा। इसके लिए तिथि निर्धारित कर प्रादेशिक कार्यालय को सूचित कर दिया जाएगा। बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए- १. महामंत्री के प्रतिवेदन को स्वीकृति प्रदान की गई। २. आजीवन सदस्यों को वंशानुगत में परिवर्तन हेतु वंशानुगत सदस्यता शुल्क की राशि में आजीवन सदस्यता शुल्क के मद में जमा राशि बाद कर शेष राशि देने पर वंशानुगत में परिवर्तन किया जाये तथा पुराने परम्परा को पुन: लागू करने के लिए आगामी प्रादेशिक समिति की बैठक में विचारार्थ रखने का निर्णय लिया गया। ३. बैंज पर खर्च की गई राशि २४,९६०/- रु. की स्वीकृति प्रदान की गई तथा नि:शुल्क देने का निर्णय लिया गया। ४. अधिवेश में पारित प्रस्ताव 'अनमोल जीवन बीमा' हेतु शाखाओं से ५ व्यक्तियों का चयन एवं दाता हेतु शाखा पदाधिकारियों पर भार दिया गया। इस योजना को संयुक्त महामंत्री श्री मनोज झुनझुनवाला एवं श्री गिरिधारी लाल सर्राफ मिलकर शाखाओं के लिए एक विस्तृत योजना बनाएंगे, जिसे अमल में लाने के लिए उचित कार्रवाई करने का निर्णय लिया गया। ५. एक रुपया लेकर समाज के सभी भाई-बहनों एवं बच्चों का पंजियन कराने हेतु शाखा पर भार दिया गया। ६. सेवा कार्य हेतु कोई शाखा चापाकल लगाती है तो प्रदेश के कुछ आर्थिक सहयोग देने का निर्णय लिया गया। ७. कार्यकर्त्ता सेमिनार कटिहार में कराने तथा इसके लिए श्री सत्यनारायण अग्रवाल जी से सम्पर्क कर तिथि निर्धारित करने का निर्णय लिया गया। ८. लेखा-जोखा की स्वीकृति लेने का निर्णय लिया गया। ९. सत्र २००५-०७ के लिए प्रस्तुत प्रस्तावित बजट को स्वीकृति प्रदान की गई। १०. सलाहकार एवं समन्वय कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति की स्वीकृति प्रदान की गई। ११. ८० जी में पंजीयन कराने का निर्णय लिया गया। १२. समाज के सांसद, विधायक एवं विधान परिषद के सदस्यों को प्रादेशिक सम्मेलन के द्वारा सम्मानित करने के पारित प्रस्ताव को लागू करने का शीघ्र निर्णय लिया गया।

प्रादेशिक उपाध्यक्ष श्री विश्वनाथ केडिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

नैनीताल : मिस इंडिया २००५ को गौरव अवार्ड

सम्मेलन के कुमायूं मण्डल के अध्यक्ष डा. प्रभात अग्रवाल 'गोल्डी' द्वारा मिस इंडिया नीहारिका सिंह को सम्मान करते हुए उन्हें 'उत्तरांचल गौरव' अवार्ड प्रदान किया गया।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

जुनागढ़ शाखा द्वारा सत्र २००४ से अप्रैल २००५ तक किये गये कार्यों की जानकारी

निसंतान दम्पतियों हेतु निःशुल्क चिकित्सा १६० मरीज लाभान्वित। होली मिलन समारोह एवं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना। प्रशिक्षण शिविर जिसमें मेंहदी व साड़ी पहनने के तरीके सिखाए गए। १५ अगस्त को राष्ट्रीय ध्वजारोहण। तीज पर्व स्टाल के साथ मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन। विकलांग बच्चों में फल वस्त्र मिठाईयां दवाइयां वितरित। अग्रसेन जयंती पर सातदिवसीय कार्यक्रम आयोजित। दीपावली मिलन समारोह यशोदा अनाथाश्रम के बच्चों में फल मिठाइयां शीत वस्त्र, चाकलेट एवं दैनिक जरूरतों का सामान वितरित। १५०० रु. की राशि आश्रम को भी दी गई। थुआमुल रामपुर के शिशु विद्या मंदिर में बच्चों में स्वेटर वितरण किया। एक टेलीविजन सेट डीटीसी स्कूल को भेंट दी एवं रु. ११०० की राशि एवं लालटेनों की सुविधा प्रदान की गई। चमेली देवी महिला महाविद्यालय की प्रींसिपल श्रीमती प्रियमंजरी पण्डा का सम्मान। प्याऊ का प्रबंध। एक अंधी महिला के आंखों के आपरेशन चन्दा एकत्रित कर करवाया गया। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की प्रथम कार्यकारिणी बैठक में योगदान दिया गया।

अध्यक्षा का दौरा : २५.४.०५ जुनागढ़ मारवाड़ी महिला समिति के निमंत्रण पर उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन अध्यक्षा श्रीमती निर्मला बंका, सचिव श्रीमती बीना बिरला, सहसचिव श्रीमती प्रवीण भंडारी का जूनागढ़ में आगमन पर जूनागढ़ में सभा का आयोजन किया गया। शाखा कोषाध्यक्ष श्रीमती मीता देवी बंसल ने स्वागत भाषण दिया। अध्यक्ष जामोती देवी ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। सचिव कोमल अग्रवाल द्वारा किये गये कार्यों की संक्षिप्त जानकारी दी गई। प्रदेशिक अध्यक्ष निर्मला बंका ने आभार व्यक्त किया।

आसनसोल में प्रादेशिक कार्यकारिणी की बैठक : पश्चिम बंगाल प्रादेशिक महिला सम्मेलन की कार्यकारिणी की बैठक बर्नपुर शाखा के सौजन्य से आसनसोल में ७ मार्च २००५ को हुई। बैठक की अध्यक्षा प्रान्तीय अध्यक्षा श्रीमती सरोज लोढ़ा ने की। बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये- इस बैठक में बांकुड़ा, पुरूलिया, मेदिनापुर, आद्रा, रघुनाथपुर, बराकर, नियामतपुर, आसनसोल, रानीगंज, बर्नपुर से १०० महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में विशेष रूप से उपस्थित महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सावित्री बाफना ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि ''सम्मेलन का उद्देश्य समाज की सेवा एवं विकास के कार्य आयोजित करना है। इसके तहत संगठन की ओर से स्वास्थ्य जांच शिविर, नेत्र जांच शिविर, गरीब बच्चों की शिक्षा का प्रयास व पाठ्य सामग्री वितरण आदि शामिल है। संगठन के विभिन्न शाखाओं की ओर से सुनामी पीड़ितों के राहत मद में अब तक १८ लाख रु. दिया जा चुका है। समाज की महिलाओं में जागरुकता पैदा करने तथा रोजगार के मौके मुहैया कराने के मद्देनजर विभिन्न कुटीर उद्योगों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाता है।

श्रीमती बाफना ने आह्वान किया कि महिलायें अंध विश्वासों में न पड़े एवं भ्रूण हत्या का विरोध एकजुटता से करें। वे सामाजिक सेवा में युद्ध स्तर से आगे आयें। मारवाड़ी महिला सम्मेलन महिला आरक्षण की भाग-दौड़ में नहीं है लेकिन नारी के हक में बराबर लड़ेगी। उन्होंने बताया कि देश भर में मारवाड़ी महिला सम्मेलन में १० हजार सदस्याएं हैं।

महिला कार्यकर्ताओं द्वारा पश्चिम बंगाल के विभिन्न स्थानों का दौरा : १३ मार्च २०५ पश्चिम बंगाल की प्रादेशिक अध्यक्षा श्रीमती सरोज लोढ़ा के नेतृत्व में महिला कार्यकर्ताओं में बंगाल के खड़गपुर, मेदिनापुर, झारग्राम, बांकुरा, पुरुलिया, रघुनाथपुर, बराकर, नियामतपुर, आसनसोल, कोलकाता आदि शाखाओं का दौरा किया एवं संगठन को और भी मजबूत बनाने का आह्वान किया। दौरे का मुख्य उद्देश्य नारी उत्थान, भ्रूण हत्या का विरोध, नारी द्वारा नारी का सम्मान, राजनीति में नारी की भागीदारी आदि था। दौरे में प्रदेश की कार्यकारिणी सदस्याएं एवं राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सावित्री बाफना, महामंत्री रेखा राखी सम्बलपुर से श्रीमती प्रेरणा पंसारी आदि थी।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

मोतीपुर : पर्यावरण पर संगोष्ठी, निबंध प्रतियोगिता : १९ मार्च, मारवाड़ी युवा मंच के तत्वावधान में 'पर्यावरण पृथ्वी एवं हम' संगोष्ठी तथा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के दर्जनों छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया। संगोष्ठी का संचालन मंच के प्रांतीय शाखा अध्यक्ष संजय अग्रवाल ने किया। सभा को मुजफ्फरपुर के कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रशिक्षक के.के. झा सहित वार्ड पार्षद शर्मिला देवी, अनिल कुमार, विनय कुमार सिंह, प्रो. श्रवण कुमार अग्रवाल, आर.के. सिंह आदि ने सम्बोधित किया।

प्रांतीय मंत्री का अभिनंदन : मारवाड़ी युवा मंच की बैठक में प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल का अभिनंदन किया गया। उन्हें चाईबासा में उत्कृष्ट कार्यों के लिए सर्वश्रेष्ठ शाखा पदाधिकारी का सम्मान हाल में दिया गया है। इस अवसर पर कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता शाखा अध्यक्ष रमेश अग्रवाल ने की।

थाना प्रभारी का नागरिक अभिनंदन : ३१ मार्च, युवा मंच मोतीपुर शाखा के तत्वावधान में मोतीपुर के नवपदस्थापित थाना प्रभारी प्रवीण कुमार मिश्र का नागरिक अभिनंदन किया गया। इस मौके पर मंच के प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल, स्थानांतरित अवर निरीक्षक बी.डी. राम, मंच अध्यक्ष रमेश अग्रवाल आदि मौजूद थे।

अन्य संस्थाएं

सवाई माधोपुर : 'मीरा-राणाजी संवाद' मंचित : ९ अप्रैल २००५। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर ने ताऊ शेखावाटी के राजस्थानी संवाद काव्य 'मीरा-राणाजी संवाद' का मंचन सवाई माधोपुर में किया। रंगकर्मियों द्वारा इस प्रस्तुति में मीरा के मन की पीड़ा एवं राणा की व्यथा-कथा का सजीव चित्रण किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री किसन सहाय मीणा ने इस नाटक को जगह-जगह मंचित करने की अपील की। समारोह की अध्यक्षता प्रधानाचार्य श्रीमती मिथिलेश शर्मा ने की एवं नाटक का निर्देशन इप्टा रंगकर्मी मुकेश चतुर्वेदी ने किया।

जयपुर : प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान : २७ फरवरी २००५। राजभवन में मामराज अग्रवाल फाउण्डेशन द्वारा आयोजित विद्यार्थी सम्मान समारोह में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं कक्षा की परीक्षाओं में प्रथम दस स्थान प्राप्त करने वाले ८४ छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र, अंग वस्त्र और ड्राफ्ट प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटील ने कहा कि प्रतिभावान विद्यार्थियों को अवसर प्रदान कर उन्हें आगे लाने की जरूरत है। इस पीढ़ी को राष्ट्र के विकास में भागीदार बनाने के लिए तैयार किया जाए। समारोह को शिक्षामंत्री श्री घनश्याम तिवाड़ी, राजस्थान विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता डॉ. बी.डी. कल्ला, राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायाधिपति अमर सिंह गोदरा एवं श्री प्रदीप मित्तल, श्री महावीर प्रसाद रावत, राजस्थान फाउण्डेशन की अध्यक्षा सुश्री सावित्री कुनाडी, सचिव श्री ब्रह्मानन्द अग्रवाल, श्री दामोदर अग्रवाल, श्रीमती जायत्री देवी अग्रवाल, श्रीमती सुनीता अग्रवाल भी उपस्थित थे। श्री मामराज अग्रवाल ने सम्मान समारोह की विस्तार से जानकारी दी एवं राज्यपाल सहायता कोष के लिए राज्यपाल को २१ हजार की धनराशि भेंट की।

कोलकाता : बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आचार्य शास्त्री का जन्मदिन मनाया गया

३ मई २००५। प्रख्यात साहित्यकार एवं राजनेता स्व. आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के ७६वें जन्मदिन (२ मई) के अवसर पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय कक्ष में एक अंतरंग गोष्ठी संपन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि पं. छविनाथ मिश्र ने की। पुस्तकालय के पूर्व अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने घोषणा की कि आचार्य शास्त्री का अप्रकाशित साहित्य प्रकाशित किया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया डॉ. उषा द्विवेदी ने।

श्री माणिक चंद वाजपेयी का अभिनन्दन सम्पन्न : ८ मई २००५। डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान के १६वें आयोजन में पत्रकार एवं ओजस्वी वक्ता श्री माणिक चंद्र वाजपेयी को पुस्तकालय की ओर से श्रीफल, मानपत्र एवं इक्कायन हजार की राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया। अपने अभिनन्दन पर श्री माणिक चन्द्र वाजपेयी ने पुस्तकालय के प्रति आभार प्रकट किया।

समारोह के प्रधान वक्ता थे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रवक्ता श्री राम माधव। अध्यक्षता गोवा के पूर्व राज्यपाल श्री केदारनाथ साहनी ने की। कार्यक्रम के संयोजक थे श्री जुगल किशोर जैथलिया।

माहेश्वरी विद्यालय हैदराबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न : २७ मार्च। 'श्री माहेश्वरी विद्यालय' का ७वां वार्षिक दिवस समारोह विद्यालय प्रांगण में सम्पन्न हुआ। समारोह का शुभारंभ सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री रामेश्वरलाल राठी ने किया। आन्ध्र प्रदेश राज्य सरकार के तकनीकी शिक्षा मंत्री नायनी नरसिम्हा रेड्डी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के चेयरमैन श्री श्रीनिवास बंग, ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री रमेश कुमार बंग, विद्यालय के कोरेसपोंडेंट श्यामसुन्दर बंग, श्री बद्रीनारायण राठी आदि ने अपने विचार रखें। विद्यालय के विशेष अधिकारी रघुनाथ राव घाटगे ने स्वागत भाषण दिया, कार्यक्रम का संचालन सुनीता बाडे और कुमारी रेखा ने किया। इस अवसर पर ओमप्रकाश करवा, जगन्नाथ जाजू, डॉ. गोपीकिशन सोनी सहित गणमान्य नागरिक एवं अभिभावकगण उपस्थित थे।

महावीर सेवा सदन द्वारा विकलांग शिविर आयोजित : २८ अप्रैल। डोकानिया चैरीटेबुल ट्रस्ट कोलकाता के सौजन्य से महावीर सेवा सदन, कोलकाता द्वारा भागलपुर के झंडापुर गांव में विकलांग शिविर लगाया गया जिसमें आये ३०० विकलांगों में से ४० विकलांगों को नि:शुल्क जयपुर कृत्रिम पांव एवं ११० विकलांगों को जूते सहित केलिपर प्रदान किए गए। शिविर का उद्घाटन ट्रस्टी श्यामलाल डोकानिया ने किया।

कोलकाता : राजस्थान परिषद रजत जयंती एवं भक्तिमती मीरा जन्म पंचशती समारोह सम्पन्न : २ अप्रैल कोलकाता। जरूरतमंदों एवं गरीबों की सेवा में राजस्थानियों द्वारा संचालित सेवा संस्थायें ही अग्रिम पंक्ति में खड़ी है। श्री सुब्रत मुखर्जी महापौर कोलकाता नगर निगम के राजस्थान परिषद की रजत जयंती एवं भक्तिमति मीरा जन्म समारोह के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि कोलकाता मिनी राजस्थान है। मारवाड़ी समाज यहां के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में अहम भूमिका अदा कर रहा है। परिषद के प्रयत्न से कोलकाता में महाराणा प्रताप की स्मृति में एक पार्क एवं सड़क का विधिवत

नामाकरण हो चुका है। मेयर ने मीराबाई के चित्र पर पुष्प चढ़ाकर समारोह का उद्घाटन किया एवं परिषद द्वारा प्रकाशित ३०० पृष्ठ की भव्य स्मारिका का लोकार्पण भी किया।

प्रधान वक्ता एवं सुप्रसिद्ध चिन्तक डॉ. महेश चन्द्र शर्मा (पूर्व सांसद) समारोह के विशिष्ट अतिथि दैनिक नवज्योति जयपुर के सम्पादक श्री श्याम आचार्य विशिष्ट अतिथि श्री रमाशंकर झंवर दैनिक सन्मार्ग के सम्पादक श्री रामअवतार गुप्त मीरा जन्म पंचशती पर सुन्दर आयोजन हेतु परिषद को बधाई दी। परिषद के उपाध्यक्ष श्री युगल किशोर जैथलिया ने परिषद के २५ वर्षों के कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया एवं श्री शार्दुल सिंह जैन ने स्वागत भाषण दिया।

राजस्थान परिषद के रजत जयन्ती अवसर पर भाषण देते हुए कोलकाता के मेयर सुव्रत मुखर्जी। मंच पर सर्वश्री जुगल किशोर जैथलिया, शार्दुल सिंह जैन, राम अवतार गुप्त, डॉ. महेश चन्द शर्मा, अरुण मल्लावत, श्याम आचार्य, रमाशंकर झंवर, मीना पुरोहित, हरिमोहन बांगड़ आदि।

इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार श्री कन्हैयालाल सेठिया की प्रेरणा से राजस्थान फाउण्डेशन की ओर से प्रवासी प्रतिभा पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपये की राशि परिषद को दी गई। मंच पर कोलकाता नगरपालिका के उपमेयर श्रीमती मीनादेवी पुरोहित सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री हरिमोहन बांगड़ एवं पूर्व अध्यक्ष श्री महावीर प्रसाद नारसरिया भी उपस्थित थे।

श्री रूगलाल सुराणा ने कार्यक्रम का संचालन किया। परिषद के महामंत्री श्री अरुण प्रकाश मल्लावत ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बधाई / शुभकामनाएं

श्री मोहनलाल तुलस्यान को फॉस्मी एक्सेलेंस अवार्ड

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान को पिछले दिनों फेडरेशन ऑफ स्मॉल एंड मीडियम इंडस्ट्रीज (फॉस्मी), पश्चिम बंगाल ने लघु उद्योग के विकास में विशिष्ट भूमिका के लिए 'एक्सेलेंस अवार्ड' से सम्मानित किया। श्री तुलस्यान को यह सम्मान पहली पीढ़ी में औद्योगिक विकास की श्रेणी में दिया गया। श्री तुलस्यान मेक्सवर्थ इंडस्ट्रीज के चेयरमैन हैं जो केबल लुब्रिकेट के निर्माण में देश की अग्रणी कंपनी है।

आशुतोष बर्थ सेन्टेनरी हॉल में एक भव्य समारोह में राज्य के कुटीर व लघु उद्योग राज्यमंत्री श्री नारायण विश्वास ने श्री तुलस्यान को यह सम्मान प्रदान किया। इस समारोह में राज्य के श्रम मंत्री मो. अमीन, वित्त मंत्री डा. असीम दासगुप्ता, कुटीर व लघु उद्योग विभाग की मुख्य सचिव श्रीमती मीरा पांडे सहित भारी संख्या में लघु उद्यमी उपस्थित थे।

श्री नगर : डॉ. के. के. बिड़ला उद्योग रत्न पुरस्कार से सम्मानित

२० मई। डा. के.के. बिड़ला को श्रीनगर में उद्योग रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जम्मू-कश्मीर में रोजगार पैदा करने के उनके अथक प्रयास एवं योगदान को पहचानते हुए उन्हें इस पुरस्कार से नवाजा गया। मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद ने एक कार्यक्रम में डा. बिड़ला को यह पुरस्कार प्रदान किया। पीएचडी चेम्बर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्री ने राज्य सरकार के साथ मिलकर यह कार्यक्रम आयोजित किया था। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान एवं महामंत्री श्री भानीराम सुरेका द्वारा डा. के.के. बिड़ला को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

कुमारी लक्ष्मी अग्रवाल को बधाई

कुमार लक्ष्मी अग्रवाल को खागेश्वर उच्च विद्यालय कालाहंडी से २००४ की ए.एच.सी. परीक्षा में ९१.३ प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर फाउंडेशन फॉर एक्सेलेंस (एफएफई) यूएसए द्वारा स्कालर चुना गया है। कालाहंडी शिक्षा विकास परिषद द्वारा एफएफई की ओर से कुमारी अग्रवाल को १ मई २००५ को भवानीपटना में एक सर्टिफिकेट एवं ५०००/- रु. का चेक प्रदान किया गया। जूनागढ़ निवासी श्रीलाल साहब अग्रवाल एवं श्रीमती रुक्मीनी अग्रवाल की सुपुत्री कुमारी लक्ष्मी वर्तमान में भुवनेश्वर के जुपीटर साइंस कॉलेज में कक्षा १२वीं साइंस की छात्रा है। सम्मेलन की ओर से कुमारी लक्ष्मी अग्रवाल के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

विजय कुमार तोदी को शुभकामनाएं

एक अन्य सूचनानुसार विदित हुआ कि गोलाघाट शाखा मंत्री श्री विजय कुमार तोदी जोनल रेलवे यूजर्स कन्सल्टेटिव कमिटि के सदस्य मनोनीत किये गये हैं।

गाँधी जी के 'महात्मा' बनने के हजारों प्रकरणों में से एक

सन् १९४७ में भड़के साम्प्रदायिक दंगों को शान्त कराने के लिए गाँधी जी मनु गाँधी के साथ पैदल यात्रा कर रहे थे। एक गांव में उन्होंने एक नौ-दस वर्षीया बालिका को मोतीझरा से पीड़ित देखा। वह बालिका मोतीझरा के साथ निमोनिया भी हो जाने के कारण अत्यंत कमजोर हो गई थी। गाँधी जी को देखकर बालिका के पास बैठी औरतें अंदर चली गईं। वे गाँधी जी को अपना दुश्मन मानती थीं। मनु के समझाने पर भी औरतें बाहर नहीं आईं। निराश मनु ने बाहर आकर देखा कि गाँधी जी ने बीमार लड़की के नीचे से मैली चादर निकालकर अपनी साफ चादर उसके नीचे बिछा दी है। अपना गर्म शॉल भी उसे ओढ़ा दिया है और खुद सर्दी में ठिठुर रहे हैं। इतना ही नहीं, दोपहर तक गाँधीजी ने मनु को दो-तीन बार भेज कर उस बीमार लड़की को शहद-पानी भी पिलवाया। उसके सिर और पेट पर मिट्टी की पट्टी भी रखवाई। इस सेवा से रात तक उसका बुखार उतर गया। सुबह बच्ची के अच्छा होने पर औरतें गाँधी जी की सेवा से प्रभावित होकर खिंची चली आईं और उनसे अपने व्यवहार के लिए माफी मांगने लगीं।

फोर्ड मोटर के मालिक हेनरी फोर्ड के जीवन का एक वाकया

हेनरी फोर्ड संसार के अग्रणी उद्योगपति थे। उन्होंने अमेरिका में फोर्ड मोटर कंपनी की स्थापना की। उनके नाम पर बनाई गई फोर्ड मोटर ने हर जगह नाम कमाया। एक भारतीय उद्योगपति ने मोटर कार का कारखाना लगाने से पूर्व अमेरिका जाकर हेनरी फोर्ड से भेंट करने का निश्चय किया। अमेरिका पहुँचकर उसने हेनरी फोर्ड को फोन किया और मिलने की इच्छा व्यक्त की। श्री फोर्ड ने कहा, ''शाम छह बजे मेरे निवास स्थान पर आ जाइएगा।'' उद्योगपति उनके घर पहुँचे तो देखा कि एक व्यक्ति अपने खाने के बर्तन स्वयं साफ कर रहा है। बर्तन साफ कर एक ओर रख देने के बाद उसने कहा, ''बैठिए, मुझे हेनरी फोर्ड कहते हैं।'' भारतीय ने कहा, ''आप इतने बड़े व्यक्ति होकर भी अपने बर्तन स्वयं साफ क्यों कर रहे थे ? यह काम तो नौकर भी कर सकता था ?'' श्री फोर्ड ने उत्तर दिया, ''अपना काम स्वयं करने का अभ्यास छूट न जाए इसलिए नौकर के रहने के बावजूद भी मैं अपना काम स्वयं करता था, हाथों से किए गए कठोर परिश्रम के कारण ही मैं आज फोर्ड कारखाने का मालिक बन पाया हूँ। मैं उन दिनों को भूल न जाऊं इसलिए अपने काम स्वयं अपने हाथों से करता हूँ।'' संसार के जाने-माने धनी व्यक्ति की सादगी तथा निरभिमानता को देखकर भारतीय उद्योगपति हतप्रभ रह गया।

REGISTERED Postal Registration No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06 SAMAJ VIKAS - MAY 2005 RNI Regd. No. 2868/68

Leaders

in construction equipment and infrastructure financing

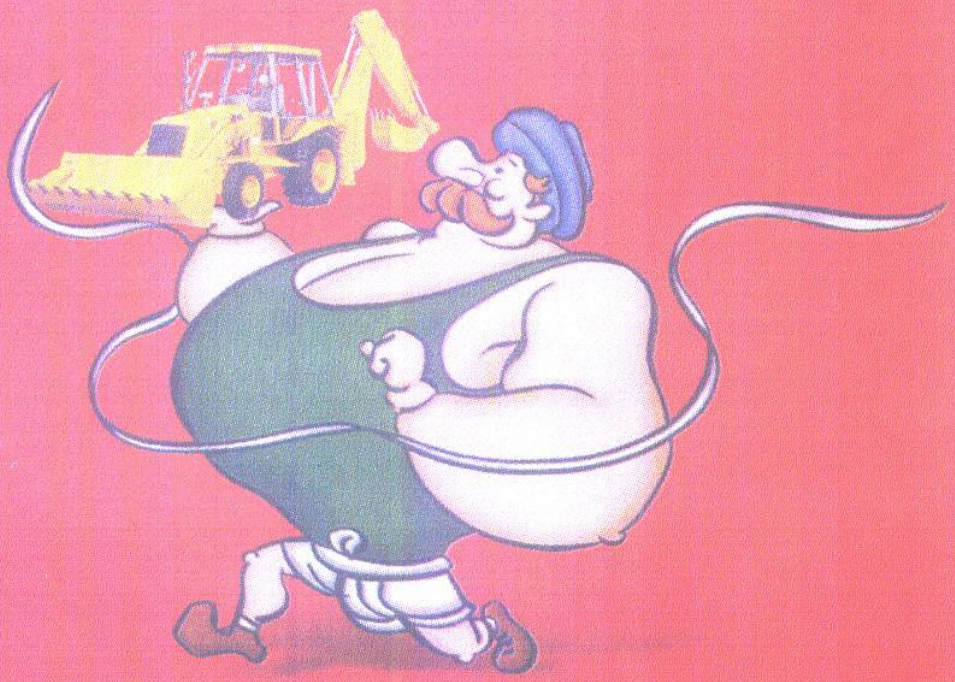

SREI

Srei Infrastructure Finance Limited

'Vishwakarma' 86C, Topsia Road (South), Kolkata-700 046,Tel : +91 33 2285 0112-5/0124-7, Fax : +91 33 22857542/8501,
corporate@srei.com, www.srei.com

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,